त्रिनेत्र

एक अविश्वसनीय दास्ताँ

लेखक-

राहुल जैन

त्रिनेत्र- एक अविश्वसनीय दास्ताँ

Rahul Jain

BlueRose ONE .com DIY
Stories Matter

© Rahul Jain 2023

All rights reserved by the author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without the prior permission of the author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the author and publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of the information contained within.

Title: त्रिनेत्र- एक अविश्वसनीय दास्ताँ
Language: Hindi
Character set encoding: UTF-8

First published by

An Imprint of BlueRose Publishers

Head Office: B-6, 2nd Floor,
ABL Workspaces, Block B, Sector 4,
Noida, Uttar Pradesh 201301
M: +91-8882 898 898

BlueRose ONE .com
DIY
Stories Matter

ACKNOWLEDGEMENTS

इस किताब के लिए मैं धन्यवाद करना चाहता हूँ अपने परिवार को, जिन्होंने मुझे लगातार प्रोत्साहन दिया और उनके भरोसे और असीम प्रेम ने इस किताब को इसके अंतिम स्वरुप में पहुंचने में बड़ा योगदान दिया. साथ ही मेरी लेखनी को पढ़कर उसमें और सुधार करने के लिए मैं उनका तहे दिल से धन्यवाद करना चाहता हूँ.

मेरे पुत्र अर्नव की अशांत जिज्ञासा और उत्सुकता का ही नतीजा है ,कि मैं ये किताब पूर्ण कर पाया.

साथ ही मैं धन्यवाद करना चाहता हूँ श्रीमान नरेश मिति का, जिन्होंने किताब के पहले पेज के लिए उनकी "शिव के शांत रूप को दर्शाती Acrylic Painting" को उपयोग में लाने की स्वीकृति प्रदान की.

FOREWORD

कभी-कभी आपके जीवन में कुछ ऐसे लोग मिल जाते हैं जिनके अनुभव या उसे अगर आपबीती का नाम दें तो भी अन्यथा नहीं होगा, आपको कलम उठाने पर मजबूर कर ही देते हैं। ऐसा ही एक वाकया मेरे साथ हुआ जब मैंने अंडमान की यात्रा की। एक ऐसी घटना जो घटी है या नहीं इसका मेरे पास कोई साक्ष्य नहीं पर बड़े ही दिलचस्प मोड़ों से होते हुए, और कुछ दुखद यादों को समेटे हुए ये इतने अद्‌भुत और अविश्वसनीय रास्तों से गुजरती है, कि जब आप इसके भंवर में एक बार उतरेंगे तो डूबते ही जायेंगे।

इसमें आपको अहसास होगा कि कुछ शक्तियां अपने प्राकृतिक स्वरुप में ही साम्य अवस्था में रहती है, जैसे ही हम उन्हें जानकर या अनजाने में उसके स्वरुप से अलग करते हैं तो वह हाहाकार मचा देती हैं और फिर उन्हें रोकना मानव के बस में नहीं होता ।

ये क्यूंकि मेरा पहला प्रयास है तो इसमें मैं कितना सफल होता हूँ ये तो हमारे पाठक ही बता सकते हैं, पर मैंने कोशिश की है कि अपनी लेखनी से मैं आपको उन घटनाओं के पास तक ले जा सकूँ ।

CONTENTS

Copyright Declaration II

Dedication V

Acknowledgements VII

Foreword IX

Chapter 1
1. अंडमान की यात्रा । *13*

Chapter 2
2. प्रयोग का अनसुलझा रहस्य *17*

Chapter 3
3. कादंबरी की पीड़ा *25*

Chapter 4
4. प्रलय का दिन *31*

Chapter 5
5. डायरी के राज़ *37*

Chapter 6
6. त्रिनेत्र की खोज *47*

Chapter 7
7. शिव शक्ति का मिलन *57*

60

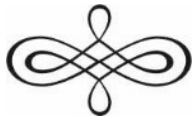

1. 1. अंडमान की यात्रा ।

Covid-19 ये नाम सुनते ही लोगों को lockdown, अपनों की अकाल मृत्यु और न जाने क्या-क्या याद आ जाता है। कुछ अच्छा भी हुआ और बहुत कुछ बुरा भी, हमने भी घर में 2 साल कैद रहने के बाद बाहर कहीं दूर घूमने का प्लान बनाया। सुबह ट्विटर देखते हुए कुछ एक्टर्स और एक्ट्रेस के अंडमान और निकोबार के फोटोज देखे, सोचा इस बार वहीं जाया जाए। श्रीमती जी से विचार विमर्श किया तो वह भी खुशी खुशी राज़ी हो गई। वैसे भी lockdown में गृहिणियों की मेहनत ही सबसे ज्यादा हुई, कुछ न कुछ नया बनाते रही घर में बैठे पति और बच्चों के लिए। Covid-19 के दौरान खर्च काफी कम हुए थे तो सोचा इन बचे हुए पैसों से कुछ बढ़िया रास्ता अपनाया जाए कि यात्रा यादगार रहे। अलग-अलग रास्ते सोचते हुए गूगल बाबा से यात्रा के तरीकों के बारे में जानकारी निकाली तो पता चला की cordellia cruise से जाने का निश्चय किया। जाते वक्त cordellia cruise और आते वक्त पोर्ट ब्लेयर से मुंबई flight book किया। क्रूज यात्रा की तारीख 4 oct.2021 थी तो पहले से सब तैयारी कर ली जैसे universal charger, सर चकराने और vomiting के लिए दवाइयां आदि। बहुत बड़ा क्रूज था वह, कुछ 11 माले की इमारत के बराबर और सबसे अच्छी बात यह थी की समंदर में मोबाइल का नेटवर्क ही नहीं आता। इतना सुकून था वहां, जैसे खुद से मिलने का समय मिल गया। सुकून भरे दिन, अनवरत मस्ती और कहीं कोई जल्दी नहीं, न कहीं भागना न कोई target पूरे करने, और मोबाइल नेटवर्क था ही नहीं तो कोई चाह के भी संपर्क नहीं कर सकता था। Cordelia cruise ने पांचवे दिन हमें पोर्ट ब्लेयर छोड़ा पोर्ट की गहराई ज्यादा न होने के कारण बीच समंदर से हमें tender boat से ले जाया गया,cruise को छोड़ते वक़्त ऐसा लगा जैसे , फिर से हम शांत और मस्त जीवन से उसी अशांत और अस्त-व्यस्त जीवन में जा रहे हैं। 9 th oct शाम को हम नॉर्थ अंडमान के दिगलीपुर गांव में एक पहले से तय cottage में रुके , अगले दिन हमारा वाटर स्पोर्ट्स का प्रोग्राम था। कॉटेज की देखभाल एक 58 साल के वृद्ध आदमी कर रहा था, हालांकि उसकी कद काठी से, वह अभी भी उतना वृद्ध नहीं दिखता था। वह ही हमारा ड्राइवर भी था और अगले दिन वाटर स्पोर्ट्स और खाने का प्रबंध भी उसी ने किया था। अगला पूरा दिन हमारा बहुत व्यस्त गया, श्रीमती जीतो 2 activity के बाद ही बस बोल दी, लेकिन मैं सब एक्टिविटीज करना चाहता था तो श्रीमती जी और बच्चे को वहीं छोड़ मैं परमशिवम के

साथ हो लिया। उधर और भी tourist थे, जो अलग अलग एक्टिविटीज में busy थे। समंदर की रोमांचक दुनिया की यात्रा के बाद मन बड़ा आध्यात्मिक हो गया और गाड़ी में पत्निजी से इन्हीं सब बातों पर चर्चा करने लगा की शांत वातावरण कितना सुकून देता है। भागदौड़ भरी दुनिया से यहां का वातावरण कितना अलग है, प्रकृति के करीब कितना सुकून है। परमशिवम भी हमारी बातों में रुचि लेने लगे। बात पहुंचते पहुंचते संसार की विचित्रता और इसके निर्माण तक पहुंच गई। परमशिवम् तो जैसे इन सब के ज्ञाता थे, जैसे उन्होंने इसे अपने सामने बनते हुए देखा हो। एक साधारण से आदमी के मुंह से इतने ज्ञान की बातें सुन मेरे मुंह से अनायास ही निकल गया, "परमशिवमजी ऐसा लगता है या तो आपने ब्रम्हांड खुद बनते हुए देखा है या आप किसी बड़ी scientific study में शामिल थे।" वह कुछ न बोले बस मुस्कुरा दिए, लेकिन वह मुस्कान मुझे बड़ी रहस्यमयी लगी।

कमरे में आने के बाद भी में उनकी बातों के बारे में ही सोच रहा था। श्रीमती जीसे बोला "कितना ज्ञान है एक साधारण से केयरटेकर के पास!",पर वह मेरी बात को अनसुना कर बच्चे को सुलाने में लग गई। खाना हम बाहर से खा कर ही आए थे तो वह दोनों तो सो गए, परंतु मेरी आंखों में नींद न थी, मैं अभी भी परमशिवम की बातों के बारे में ही सोच रहा था। सोचते सोचते मैं cottage के बाहर lawn में आया और टहलने लगा। थोड़ी देर में परमशिवम भी वहां कुछ सूखी लकड़ियां ले कर आ गए और आग जलाने के लिए आस पास से सूखे पत्ते इकट्ठा करने लगे। मैंने भी उनकी मदद की और कमरे से दो कुर्सियां लाकर हम दोनों वहां बैठ गए। आग जलाकर हम फिर से इधर उधर की बातें करने लगे। मैंने उनसे पूछा "यहां आस पास और क्या है कुछ खास देखने को", तो वह बोले "वैसे तो समंदर ही है पर यहां से कुछ 140 km दूर एक सोया हुआ ज्वालामुखी है, जिसका नाम है नार्कुन्डा मतलब "नरक का गड्ढा", पर वहां न ही जाया जाए तो अच्छा है"। मैंने कहा "क्यों क्या है वहां ऐसा जो आप नहीं जाने देना चाहते"!

एक लंबी सांस लेते हुए उन्होंने कहा "मार्च 2005 में अंतिम बार उस जगह गया था, फिर कभी जाने की हिम्मत न हुई"। ऐसा कहकर जैसे वह पुरानी यादों में कहीं खो गए। मैंने उनको 2-3 बार पुकारा पर जैसे यादों के किसी बवंडर के साथ उनकी सुध भी उन्हें न रही। मैंने उन्हें झकझोरा और कहा, "मुझे भी कुछ बताइए क्या हुआ था मार्च 2005 में"। पहले तो वह ना नुकुर करते रहे पर बहुत जोर देने पर बोले आप कह रहे थे न कि ऐसा लगता है जैसे मैंने ब्रम्हांड को बनते देखा है" , ये सच है कि देखा है मैंने, कैसे बनता है ब्रम्हांड और कैसे ये जिज्ञासा लोगों की जान ले लेती है।"

अब चौंकने की बारी मेरी थी, ऐसा लगा उम्र के साथ उनका दिमाग भी बुड्ढा हो के कुछ ख्याल बुन रहा है, पर फिर भी पता नहीं क्यों?,मुझे उन पर विश्वास करने का मन कर रहा था, क्योंकि जिस विवरण के साथ उन्होंने मुझे ब्रम्हांड की उत्पत्ति के बारे में बताया था, वह मुझे उन पर

विश्वास करने को मजबूर कर रहा था। इसके बाद जो कहानी उन्होंने मुझे सुनाई वह किसी पौराणिक कथा सी लग रही थी, पर जो साक्ष्य उन्होंने मुझे दिखाए वह किसी सच से कम नहीं लग रहे थे। मैंने उनकी कहानी सुनने के बाद ये निश्चय तो कर ही लिया था कि मैं इसे एक किताब का रूप जरूर दूंगा, पर उससे पहले मैं कुछ बातों को खुद खोजना चाहता था और उन पर इत्मीनान होने के बाद ही अब इस कहानी को सबके सामने लाने का प्रयास किया है। मैं एक बहुत अच्छा लेखक नहीं पर जितना हो सका उनकी कहानी को मैंने इस तरह माला में पिरोया है कि आप सब तक उसे यथावत पहुंचा सकूं और इसीलिए लेखनी में कुछ स्वतंत्रता भी ली है, क्योंकि ये कहानी 18 साल पुरानी है, और किरदार सारे अनदेखे अनसुने हैं।

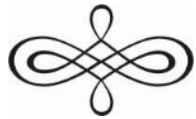

2. 2. प्रयोग का अनसुलझा रहस्य

जून 2004-अंधेरी रात थी, बाहर बादल छाए हुए थे, बिजलियां जैसे माहोल को कंपा रही थी। साइंस लैब से सब जा चुके थे, हवा सांय सांय कर के माहोल को डरावना बना रही थी, ऐसे माहौल में भी प्रोफेसर रंगनाथन (उम्र-50 साल) अपने उस प्रयोग में व्यस्त थे जो अगर सफल हो जाए तो, मानव दुनिया का इतिहास बदल सकता था। वह परेशान कभी इधर तो कभी उधर कुछ ढूंढ रहे थे जैसे कुछ मिल न रहा हो, पर क्या?

वह खुद से ही बडबडाने लगे, प्रोफेसर हो के एक डायरी नहीं संभलती तुझसे, ये वह डायरी थी जिसमें उन्होंने ऐसी घटना देखकर उसके सार को लिखा था, जिसकी वजह से आज वह इस अद्भुत प्रयोग तक पहुंचे थे, पर वह डायरी कहीं भूल गए थे । डायरी के साथ ही वह उन ख्यालों में खो गए कि कितना अद्भुत अनुभव था वह, और उन्हें खुद पर गर्व भी था क्यूंकि वह उस स्थान से वापस आये थे जहाँ से कभी कोई जिन्दा बाहर न आ सका।

अब वे और समय बर्बाद नहीं करना चाहते थे, वह फिर से उस प्रयोग में जुट गए। तभी अचानक लाइट चली गई, उन्होंने झुंझलाते हुए टॉर्च ढूंढने के लिए मोबाइल की लाइट जलाई, पर उन्हें याद नहीं आ रहा था की वह कहां रखी है। उन्हें अपनी लापरवाही पर बहुत गुस्सा आने लगा और कादंबरी की वह बात याद आई की इतने बड़े साइंटिस्ट हो लेकिन छोटी-छोटी चीजें रख के भूल जाते हो।

वह यादों में समय न गंवाते हुए फिर से टॉर्च ढूंढने में लग गए। उन्होंने अलमारी खोली और अपनी बेतरतीब सी रखी फाइल्स के बीच टॉर्च ढूंढने लगे, वह इतने बेताबी से टॉर्च ढूंढ रहे थे कि उन्हें ये ख्याल ही न रहा की टॉर्च उन्होंने अपने कोट की साइड पॉकेट में रखी थी, जो उन्होंने इस समय भी पहन के रखा था। जब टॉर्च अलमारी के दरवाजे से टकराने लगी तो उन्होंने कोट की जेब में हाथ डाला। उन्हें अपने भुलक्कड़ स्वभाव पर बहुत गुस्सा आया साथ ही हंसी भी। वह चाहते थे की वे ये प्रयोग सुबह सब के सामने करें, परंतु वह एक बार खुद परीक्षण करके निश्चिंत हो जाना चाहते थे।

उन्होंने एक मूर्ति जो लाल कपड़े से ढकी थी, उसको नमस्कार किया और उसे कांच के बॉक्स के सामने रख दिया और फिर उस लीवर को खींच दिया जो कांच के दो पाइप को एक छोटे कांच के बॉक्स से जोड़ता था, उन पाइप में से कुछ चमकीले कण उस कांच के बॉक्स में तैरने लगे। वे याद करने लगे कि कितनी मुश्किल से उन दो पत्थरों से उन्होंने ये छोटे चमकीले कण तैयार किये थे, तभी वह कांच का बॉक्स रोशनी से जगमगाने लगा और वह रोशनी धीरे धीरे बढ़ने लगी। प्रोफेसर का चेहरा खुशी से खिल गया और वे उस कांच के बॉक्स के पास जा के रोशनी के अलग अलग रंगों को देखने लगे। उन्होंने मूर्ति की तरफ टॉर्च मारी, और टॉर्च मारते ही उनका चेहरा फक्क पड़ गया, उनकी खुशी ज्यादा समय तक नहीं रह पाई। वह कांच का बॉक्स धीरे धीरे हिलने लगा और धीरे धीरे उठती दरारों ने किसी अनिष्ट के होने का अहसास प्रोफेसर को दे दिया। प्रोफेसर के माथे पर पसीने की बूंदें चमकने लगी और उनका शरीर बुरी तरह से कांपने लगा। वह लीवर को खींचने को लपके, पर बहुत देर हो चुकी थी। अचानक एक धमाका हुआ और कमरे में अथाह रोशनी फैल गई। धमाके की आवाज दूर-दूर तक फैल गई और 2 km के दायरे में स्थित इमारतें थरथराने लगी और सब घरों के शीशे टूट गए।

लोग किसी अनहोनी की आशंका से घर के बाहर की और दौड़ पड़े, और सब तरफ अफरा तफरी मच गई। गाड़ियों के सायरन बजने लगे। SIT (Science institute and technology) के Dean Mr. M. Nageshwar (उम्र-57 साल) ने फायर डिपार्टमेंट के ऑफिसर को फोन किया और कहा, " मनोज कुछ अनहोनी हुई है, तुम जल्दी साइंस सेंटर में पहुंचो "। उधर से कुछ कांपती आवाज़ में मनोज ने कहा "सर हम जल्दी ही पहुंचने ही वाले हैं"।

Nageshwar SIT Hyderabad को पिछले 25 सालों से संभाल रहे थे, Labs में experiments के दौरान कभी कभी छोटे मोटे हादसे हो जाते थे पर पता नहीं क्यों आज उनका मन बहुत घबरा रहा था, वे भी भागकर चौराहे तक आ चुके थे, लोग अभी भी हैरान परेशान थे। सभी सोच रहे थे कि फिर से घर में जाएं की नहीं, हुआ क्या है अब तक किसी को कुछ मालूम नहीं पड़ रहा था। तभी मनोज का फोन नागेश्वर को आया, किसी अनहोनी की आशंका से कांपते हाथों से dean ने फोन उठाया, उधर से आवाज आई " सर आप जल्दी आ जाइए, यहां कुछ अजीब हुआ है।

नागेश्वर ने फोन रखा, और घर की तरफ भागे। घर में वह अकेले ही थे, बेटा अमेरिका पढ़ रहा था और श्रीमती जी बेटी के पास वारंगल गई हुई थी। वह जल्दी जल्दी में वैसे भी घर खुला ही छोड़ आए थे। उन्होंने कार की बजाय स्कूटी से जाना ज्यादा सही समझा। उन्होंने घर से स्कूटी की चाबी ली और लुंगी बनियान में ही निकल पड़े, उन्हें ये ख्याल भी न रहा की उन्होंने क्या पहना है, बस दिमाग में ख्यालों के बादल से घुमड़ आए थे। आज प्रोफेसर रंगनाथन ने उनसे देर तक रुकने की परमिशन मांगी थी, तो क्या उनकी किसी गलती से ये सब हुआ, और प्रोफेसर

रंगनाथन का क्या हुआ क्या वह इस धमाके में बचे होंगे। ये ही सब सोचते हुए वे साइंस सेंटर तक पहुंच गए, मनोज जैसे उन्हीं का इंतजार कर रहा था, उनके पहुंचते ही वह आश्चर्य और डर से उनकी तरफ भागता हुआ आया। मनोज बोला " सर जल्दी चलिए, देखिए क्या हुआ है"! नागेश्वर ने स्कूटी स्टैंड पर लगाई और मनोज के साथ भागते हुए साइंस सेंटर की एंट्रेंस में घुस गए। वहां जाते ही जो उन्होंने देखा , उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास ही न हुआ। साइंस सेंटर का सिर्फ एंट्रेंस बचा था अंदर की पांचों इमारतों का अब नामोनिशान ही नहीं बचा था। न उनका मलबा रहा न वे इमारतें। ये उनकी जिंदगी की सबसे अजीबोगरीब घटना थी, उन्होंने मनोज की तरफ देखा, वह भी कुछ समझ नहीं पा रहा था। इस तरह सारी इमारतों का गायब हो जाना सबकी समझ के परे था। तभी रंगप्पा जो कि फायर टीम में था बोला, "सर लगता है हमारा science centre को एलियन ले कर गया, ये काम उन्हीं का हो सकता है। हमारा गांव में भी करिअप्पा के बूढ़े बाप को ले के गया था, फिर वह भी मिला ही नहीं"। मनोज और नागेश्वर ने उसे गुस्से की नजरों से देखा। रंगप्पा सहम के चुप हो गया, पर सही जवाब तो उन दोनों के पास भी नहीं था।

फायर टीम को वहीं रुकने का बोलकर मनोज और नागेश्वर अब मैदान बन चुके साइंस सेंटर के बीचों बीच आए। वहां पहले साइंस लैब की इमारत हुआ करती थी जिसे आस पास से चार और इमारतों ने घेर रखा था। अब वहां खाली मैदान के अलावा कुछ भी न था। नागेश्वर ने दिमाग पर जोर डाला तो उन्हें याद आया की रंगनाथन इसी साइंस लैब की इमारत में काफी दिनों से एक प्रोजेक्ट में जुटे थे। पूछने पर बस इतना ही कहा कि ये एक्सपेरिमेंट दुनिया के सबसे बड़े रहस्य से पर्दा उठा देगा। अपने असिस्टेंट को भी उन्होंने इस प्रॉजेक्ट के बारे में ज्यादा कुछ नहीं बताया था।

उन्होंने इधर उधर नजर दौड़ाई, पर उन्हें कुछ खास सबूत मिला नहीं। रात का अंधेरा भी उनकी खोज में खलल डाल रहा था, इसीलिए दोनों ने सुबह आने का निश्चय किया। फायर टीम को भी नागेश्वर ने वापस जाने को कहा। स्कूटी स्टार्ट कर खुद भी जैसे ही घर के लिए मुड़ा, सामने एक साया बदहवास सा उसकी तरफ भागता हुआ दिखा, दूर से वह औरत के साए सा लग रहा था। पास आने पर उसने पहचाना कि, वह कादंबरी थी। परेशान सी उसकी आंखें नागेश्वर से रंगनाथन का पता पूछ रही थी। कादंबरी ने पूछा " क्या हुआ रंगनाथन को, क्या वह जिंदा है? उसे हॉस्पिटल शिफ्ट किया क्या? एक साथ इतने सवालों ने नागेश्वर को कुछ पसोपेश में डाल दिया। उसके पास तो एक भी सवाल का जवाब नहीं था। वह बस कादंबरी को इतना ही कह पाया, कि "मुझे कुछ नहीं पता"। कादंबरी झुंझलाते हुए बोली " क्या मतलब कुछ नहीं पता? अरे कुछ तो बोलो अगर दुनिया में नहीं रहा तो वह ही बोल दो। ये कहकर वह साइंस सेंटर की तरफ भागी, नागेश्वर भी स्कूटी वहीं खड़ी कर के उसके पीछे भागा। कादंबरी जैसे ही अंदर गई उसके पांव जैसे जम गए, नागेश्वर भी उसके पीछे साइंस सेंटर तक आया और बोला " अब तुम्हीं

बताओ मैं क्या कहूं, पांचों इमारतें गायब है साइंस लैब भी, जहां रंगनाथन एक्सपेरिमेंट कर रहा था। कहीं कुछ मिला नहीं जैसे जमीन खा गई या आसमान निगल गया हो।

कादंबरी ने उससे पूछा "रंगनाथन क्या प्रयोग कर रहे थे? क्या कभी कुछ कहा उन्होंने तुमसे? नागेश्वर तो खुद ये सवाल कादंबरी से पूछना चाहता था। उसने न में सिर हिला दिया। बस उसने इतना ही कहा, "चलो कादंबरी, हम कल सुबह ही यहां कुछ तलाश शुरू कर पाएंगे"। लेकिन कादंबरी वहां कुछ और देर रहना चाहती थी, नागेश्वर ने ज्यादा कुछ नहीं कहा और वहां से स्कूटी की तरफ बढ़ गया। नागेश्वर ने स्कूटी उठाई और एक बार फिर कादंबरी को देखा, वह अब भी वहीं खड़ी थी। उसने निराशाजनक मुद्रा में सिर हिलाया और घर की तरफ निकल गया। घर जाते जाते उसने मनोज, अपने 2 प्रोफेसर्स और रंगनाथन के सहायक को सुबह 6 बजे साइंस सेंटर पर आने को बोल दिया।

रात में नागेश्वर ने सोने की बहुत कोशिश की लेकिन बहुत सारे विचार उसको बैचेन कर रहे थे। क्या सचमुच एलियन इन इमारतों को ले के गए? क्या एक्सपेरिमेंट कर रहे थे प्रोफेसर रंगनाथन? क्या हुआ था आखिर वहां? क्यों साइंस सेंटर की एक भी इमारत नहीं बची? यही सब सोचते सोचते आंख कब लग गई नागेश्वर को पता ही न चला। सुबह 5 बजे के अलार्म से उसकी नींद खुली। वह जल्दी जल्दी तैयार हुआ और साइंस सेंटर पहुंचा। कादंबरी जा चुकी थी और मनोज, मुरुगन, कृष्णन और सर्वन्ना उसका इंतजार कर रहे थे। आश्चर्य, असमंजस और अविश्वास उनकी आंखों में साफ नजर आ रहा था। सर्वन्ना से उसने पूछा " क्या प्रयोग कर रहे थे प्रोफेसर रंगनाथन? क्या इस बारे में उन्होंने तुमसे कुछ कहा था? सर्वन्ना ने न में सिर हिला दिया और बोला, " सर ने बस इतना ही कहा था कि इस प्रयोग की सफलता के बाद तुम्हें मुझ पर गर्व होगा और दुनिया का सबसे बड़ा रहस्य लोगों के सामने आ जाएगा"।

नागेश्वर ने झल्लाते हुए कहा "किसी को कुछ पता है उसके प्रयोग के बारे में, रंगनाथन दुनिया का रहस्य बताने निकला था, अब खुद दुनिया के लिए रहस्य बन गया। अब हम साइंस बोर्ड को क्या जवाब देंगे की हमारी नाक के नीचे एक प्रयोग चल रहा था और हमें खुद ही नहीं मालूम की वह क्या प्रयोग था"। सब चुप थे किसी को कुछ भी मालूम ही नहीं था।

इधर कादंबरी अपनी सुध खो बैठी थी, उसे अब भी लग रहा था की रंगनाथन जल्दी ही वापस आएगा और कहेगा की "कादंबरी देखो मैं सारा सामान ले आया, तुम मुझे भुलक्कड़ कहती हो न पर देखो इस बार मैं कुछ भी नहीं भुला, और वह कहेगी कि तुम्हारी BP की दवाई ले आए, और वह कहेगा कि अरे बस वही रह गई। सोच के उसे हंसी आ गई और हंसते हंसते वह रोने लगी तभी उसके मोबाइल पर "सुचिता" उसकी 24 साल की बेटी का फोन आया, उसकी बेटी की शादी शरमन जो कि IISC बंगलौर में साइंटिस्ट था, से हुई थी। उसने फोन उठाया

और दूसरी तरफ से आवाज आई की "मां वहां सब ठीक है ना", कादंबरी ने कोई उत्तर नहीं दिया। सुचिता बोली "रात में मैंने सपना देखा कि अप्पा मुझे अलविदा कह रहे हैं और उनके आस पास एक सफेद आसमान की चादर थी, मां अप्पा से बात कराओ ना"। कादंबरी फिर भी कुछ न बोली।

सुचिता घबराते हुए बोली "मां प्लीज कुछ तो बोलो क्या हुआ है?"और वह ये कहते कहते रोने लगी। कादंबरी रोते रोते बस इतना ही बोल सकी " सूचि तू आ जा बेटा, बस आ जा"। कहकर उसने फोन रख दिया।

साइंस सेंटर के गायब होने की बात कॉलोनी में आग की तरह फैल चुकी थी, कोई कह रहा था एलियंस का काम लगता है तो कोई इसे धरती के फटने से जोड़ रहा था। साइंस बोर्ड ने तत्काल आपात कालीन मीटिंग बुलाई और नागेश्वर और उसके कुछ सहयोगियों को तलब किया।

प्रोफेसर रुद्रमणि जो की बोर्ड के अध्यक्ष थे, उन्होंने नागेश्वर को पूछा, नागेश्वर शुरू से सब बताओ। प्रोफेसर रंगनाथन ने कब और कहां से एक्सपेरिमेंट की शुरुआत की।

नागेश्वर बोला " कुछ दिन पहले जब प्रोफेसर छुट्टियों से लौटे तो पहले दिन ही मेरे पास आए और बोले " सर मुझे अपने एक प्रयोग के लिए साइंस सेंटर में साइंस लैब की जरूरत है, ये प्रयोग दुनिया के सबसे बड़े रहस्य से पर्दा उठा सकता है।

नागेश्वर ने पहले तो मना किया क्योंकि साइंस लैब कॉलेज के students को प्रयोग के लिए काम आती थी और उसे रंगनाथन को इस तरह नहीं दिया जा सकता था, पर रंगनाथन के बहुत जोर देने पर उन्हें राज़ी होना पड़ा, रंगनाथन एक होनहार साइंटिस्ट थे, इससे पहले भी उनके हाइपरसोनिक wave टेस्ट काफी सफल रह चुके थे, उनके स्टूडेंट्स भी उनके लेक्चर्स में हमेशा उपस्थित रहते थे, उनका पुराना रिकॉर्ड देखते हुए उनको परमिशन देना लाजिमी था।

रंगनाथन ने लेकिन एक ही शर्त रखी थी की वह इस प्रयोग में किसी की मदद नहीं लेंगे और प्रयोग के दौरान उन्हें कोई डिस्टर्ब नहीं करेगा। अपने assistant सर्वन्ना को भी उन्होंने कुछ नहीं बताया था। सर्वन्ना ने बस उस लैब में जरूरी सामान रखने में उनकी मदद की थी और बाकी प्रयोग जो स्टूडेंट्स के लिए जरूरी थे दूसरी लैब्स में स्थानांतरित कर दिए गए थे।

ये सब सुनने के बाद प्रोफेसर रुद्रमणि ने सर्वन्ना की तरफ रुख किया। सर्वन्ना की तरफ मुखातिब होकर वह बोले " तुम्हे क्या पता है इस प्रयोग के बारे में और इस प्रयोग के लिए तुमने क्या सामान शिफ्ट किया था लैब में।

सर्वन्ना बोला " सर इस प्रयोग के बारे में तो मुझे कुछ नहीं बताया लेकिन इतना कहा था कि इस प्रयोग के बाद तुम्हें मुझ पर गर्व होगा। इस प्रयोग के लिए मैंने कुछ कांच के लंबे पाइप्स कुछ इलेक्ट्रिक wires और कुछ कांच के बॉक्स शिफ्ट किए थे एक कांच के बॉक्स में प्रोफेसर साहब ने मुझे एक स्लिट (लंबा खांचा) बनवाने को कहा था।

सारे वैज्ञानिक असमंजस में थे, प्रयोग सबके समझ से बाहर था क्योंकि उसका जो परिणाम आया वह बड़ा ही आश्चर्यजनक था, पांचों इमारतें उनमें रखे इंस्ट्रूमेंट्स और इमारतों के मलबे का नामोनिशान न था, सामने था तो बस एक खाली मैदान जिसको देख के ऐसा लगता था कि वहां कभी कोई साइंस सेंटर बनाया ही न गया। प्रोफेसर रुद्रमणि ने सबको अपनी अपनी राय देने को कहा।

प्रोफेसर राव ने कहा सर मुझे लगता है वह किसी परग्रही से संपर्क करने की कोशिश कर रहे होंगे, और उसी के परिणामस्वरूप सब कुछ अदृश्य हो गया। हमें आईआईएससी बंगलौर संपर्क कर के पूछना चाहिए कि क्या कोई परग्रही एक्टिविटी उसी समय में डिटेक्ट हुई है।

प्रोफेसर सुब्रह्मण्य बोले सर हो सकता है वह टाइम ट्रैवल का कोई एक्सपेरिमेंट कर रहे हो जिसके परिणामस्वरूप सब कुछ टाइम ट्रैवल कर गया हो।

प्रोफेसर बक्शी भी इस बात से सहमत दिखे कि ये हो सकता है, क्योंकि इससे पहले भी संसार में टाइम ट्रैवल की घटनाएं हुई है, जहां कभी planes तो कभी ट्रेन टाइम ट्रैवल के लूप में फंस गये हैं। प्रोफेसर घोष बोले सर हो सकता है कि वह एंटीमैटर बना रहे हो जिसने इस सारे मैटर को निगल लिया हो।

प्रोफेसर शर्मा बोले सर कहीं वह कोई गैजेट तो नहीं बना रहे थे, जिससे कि आदमी गायब हो जाता हो। इस पर प्रोफेसर राव बोले "यहां आदमी ही नहीं सारी इमारतें भी गायब हैं, आप लगता है Mr.India देख के आए हो"। इस पर प्रोफेसर शर्मा भी तपाक से बोले कि आप भी तो "कोई मिल गया" देख के आए हो। सभी उनकी हाजिर जवाबी पर हंसने लगे, कुछ देर के लिए ही सही पर माहोल थोड़ा हल्का हो गया।

सभी वैज्ञानिकों के पास सिर्फ कुछ विचार थे पर निश्चित कोई कुछ नहीं कह सकता था कि आखिर रंगनाथन क्या प्रयोग कर रहे थे।

प्रोफेसर रुद्रमणि ने कोई निष्कर्ष न निकलता देख मीटिंग को समाप्त करने का निर्णय लिया और नागेश्वर से बोले " तुम प्रोफेसर रंगनाथन की मिसिंग रिपोर्ट लिखवाओ और FIR में लिखवाना कि hy-personic waves का प्रयोग करते हुए ये हादसा हुआ। रिपोर्ट में लिखवाना की एक इमारत ढह गई जिसका मलबा हमने कॉलोनी पार्क के पीछे डलवाया है। पार्क के पीछे अभी जो हमने पुरानी लैब की इमारत

तोड़ी थी उसी का मलबा दिखा देना, मैं नहीं चाहता कि पुलिस हमें उस बात के लिए परेशान करे जिसका हमें कुछ पता ही नहीं।

प्रोफेसर रंगनाथन को क्या हुआ ये भी हममें से कोई उनके सामने नहीं बतलाएगा, सिर्फ कहना कि हो सकता है कि प्रयोग में असफल होने की वजह से वह कहीं चले गए हों।

कादंबरी को भी कॉन्फिडेंस में लो और अगर उसे कुछ पता है तो जानने की कोशिश करो। इस मीटिंग में हुई बातों की चर्चा कोई भी यहां से बाहर नहीं करेगा , वर्ना वह अपनी नौकरी जाने के लिए खुद जिम्मेदार होगा।

सभी स्टूडेंट्स और non essential staff को एक महीने की छुट्टी दे दो तब तक मैं रिजर्व फंड से ये इमारतें फिर से बनवाने का काम शुरू करवाने की कोशिश करता हूं।

यह अंतिम वाक्य जैसे सबके लिए ईश्वर का आदेश था क्योंकि कोई भी अच्छी खासी सरकारी नौकरी को खोना नहीं चाहता था। सभी ने एक स्वर में गोपनीयता की शपथ ली और मीटिंग खत्म कर सभी को छुट्टी की सूचना देने को चल दिए ।

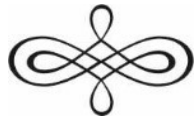

3. 3. कादंबरी की पीड़ा

नागेश्वर बड़ा पसोपेश में था ऐसे समय में उसे कादंबरी से सवाल जवाब करना ठीक नहीं लगा, फिर भी वह उसके घर की ओर चल दिया, इस उम्मीद से कि शायद कोई सुराग मिल जाए जो प्रोफेसर रंगनाथन और उसके प्रयोग के बारे में बता सके।

नागेश्वर कुछ 10 मिनट चलने के बाद रंगनाथन के घर के सामने था। वैसे भी कॉलोनी में सभी professors के घर आस पास ही थे, सिर्फ साइंस सेंटर वहां से २० मिनिट्स की दूरी पर था, जो की अब एक entrance के अलावा कुछ न था। उसने कादंबरी के घर पहुंचकर डोर बेल बजाई, कुछ दो बार डोर बेल बजने के बाद कादंबरी ने दरवाजा खोला उसकी आंखों से लग रहा था, वह कितना रोई है। अभी तक प्रोफेसर और कुछ लोगों को छोड़कर कॉलोनी में किसी को नहीं पता था कि रंगनाथन साइंस सेंटर में प्रयोग कर रहे थे तो कादंबरी के घर कोई आया भी नहीं था। नागेश्वर को बैठने को बोलकर कादंबरी खुद भी उस खिड़की के पास बैठ गई जहां से वह रास्ता दिखता था जो साइंस सेंटर की ओर जाता था। नागेश्वर ने फिर वही सवाल दोहराया "कादंबरी क्या तुम्हे सचमुच नहीं पता कि रंगनाथन क्या प्रयोग कर रहा था?" क्या तुम्हें नहीं पता कि आखिर वह किस प्रयोग के लिए दिन रात एक कर रहा था? क्या तुमसे उसने कभी इन प्रयोगों का जिक्र नहीं किया? कादंबरी बोली "जब से हम अंडमान निकोबार से घूम के आए थे रंगनाथन एक अलग ही उत्साह में था, वह अपना ज्यादातर समय लैब में ही गुजारता था कई बार तो खाना भी लैब में ही मंगा लिया करता था। सारे कागजात जो प्रयोग से संबंध रखते थे वह लैब में ही थे, रात में बस रंगनाथन देर से घर सोने आता था और सुबह जल्दी मेरे उठने से पहले ही लैब के लिए निकल जाता था। रात दिन बस किसी सोच में रहता था। मैं कहती रहती थी की आखिर कर क्या रहे हो तुम आजकल, तो बस हंस के कहता कि एक दिन तुम्हें अपने भुलक्कड़ पति पर गर्व होगा। देखो ना अब तो जैसे उसे घर का रास्ता ही याद नहीं है, जाने कहां चला गया, कहते कहते कादंबरी रोने लगी। नागेश्वर ने ज्यादा कुछ पूछना उचित न समझा और कादंबरी को दिलासा देते हुए बोला "काश हम जान पाते कि आखिर कल की मनहूस रात रंगनाथन को कहां ले के चली गई।" उसने कादंबरी को पूछा "तुमने सुचिता को खबर की?" कादंबरी ने हां में सिर हिलाया और बोली "शाम तक वह लोग आ जायेंगे।" उसने कादंबरी को कहा

"हम पुलिस स्टेशन में रंगनाथन की मिसिंग रिपोर्ट दर्ज करवा रहे हैं, हो सकता है वह तुमसे भी कुछ औपचारिक सवाल जवाबों के लिए तुम्हारे पास आए।" वह इतना कहकर दरवाजे से बाहर निकल गया, इतना अशक्त और बेचारा उसने कभी महसूस नहीं किया था, वह खुद इतना बड़ा प्रोफ़ेसर हो के ये नहीं समझ पा रहा था की आखिर हुआ क्या है?

सुचिता और शरमन शाम तक कादंबरी के पास पहुंच गए थे, जब कादंबरी ने उनको सारी बातें बताई तो दोनों के मुंह खुले रह गए, वैसे तो शरमन खुद एक साइंटिस्ट था और सभी उसकी बुद्धि का लोहा मानते थे, पर इस केस में तो उसकी बुद्धि भी कुछ काम नहीं कर रही थी। उसने घर में रखे रंगनाथन के ड्रॉअर, अलमारी सब कुछ चेक किया लेकिन उसमें उसे ऐसा कुछ नहीं मिला जो कि उसे कोई सुराग दे सके। उन्होंने 2-3 दिन वहीं रुकने का फैसला किया ताकि कहीं और से शायद कोई सुराग हाथ लग सके।

शरमन नागेश्वर, सर्वन्ना और बाकी प्रोफेसर्स से भी मिला , पर उसे कोई खास सुराग नहीं मिला। वह साइंस सेंटर के उस खाली पड़े मैदान में गया और वहां मैदान के हर कोने को छान मारा पर उसे कुछ नहीं मिला, तभी उसकी नजर पेड़ों के झुरमुट में छोटी छोटी झाड़ियों के बीच पड़ी एक चमचमाती चीज पर पडी। वह उस ओर बड़ा जहां से ये चमक आ रही थी, उसने झाड़ियों के पास बैठ कर उस चमकती चीज पर हाथ बढाया, पर वह मिट्टी में दबी होने के कारण उससे बाहर नहीं निकली, आस पास से एक नुकीला पत्थर ढूंढने के बाद वह जमीन खोदने लगा। जमीन खोदकर जब उसने उस चमकती चीज को देखा, तो उसे वह कोई मूर्ति लगी, उसे और खोदने पर पता चला कि ये भगवान शिव की मूर्ति है, उस मूर्ति को उसने साफ किया और पास लगे पानी के नल के नीचे ले जाकर धोने लगा, मूर्ति और भी चमकदार हो गई। एक साइंटिस्ट होने के नाते उसे ये तो पता लग ही गया कि ये किसी साधारण पत्थर से बनी मूर्ति नहीं। इस मूर्ति में एक और खास बात यह थी कि इसकी शिव त्रिनेत्र वाली जगह खाली थी। उसने आस पास शिव त्रिनेत्र ढूंढने की बड़ी कोशिश की, पर उसे ऐसा कुछ भी नहीं मिला जो शिव त्रिनेत्र के आकार का हो। उसने मूर्ति को संभाला और अपने साथ घर ले आया, घर की एक चाबी वह पहले ही साथ ले आया था, सो बिना बेल बजाये सीधा घर के अंदर दरवाजा खोल के प्रवेश कर गया। दिन का समय था कादंबरी और सुचिता घर में सो रही थी। उसने मूर्ति को संभाल के घर में बने मंदिर में रख दिया और बरामदे में रखे सोफे पर कुछ देर के लिए सुस्ताने लगा, थकान अधिक होने के कारण उसे जल्दी ही नींद आ गई।

शरमन जब नींद से उठा तो सुचिता और कादंबरी उसके सामने ही कुर्सी पर बैठकर चाय पी रहे थे, सुचिता ने उससे भी चाय के लिए पूछा, लेकिन उसने न में सर हिला दिया। वह अभी अभी देखे सपने से बड़ा परेशान हो गया था, पर घर में वैसे ही दुख का माहोल था और वह अपना सपना बता के कादंबरी को परेशान नहीं करना चाहता था। कादंबरी ने पूछा "शरमन कुछ पता चला, कोई सुराग जो बता सके की रंगनाथन क्या

प्रयोग कर रहा था?" शरमन ने फिर से न में सर हिला दिया, उसे वैसे भी नागेश्वर की कही एक बात परेशान कर रही थी, जो उसने सीधा तो नहीं बोली पर उसने अंदाजा लगा लिया था।

कादंबरी को उसने वह मूर्ति जो मैदान में मिली थी उसकी ओर इशारा करते हुए पूछा " क्या आप इस मूर्ति को पहचानते हो, क्या वह प्रोफेसर साहब कहीं से लाए थे?" कादंबरी ने मूर्ति की ओर देखा और कहा, "नहीं ये मूर्ति तो मैंने पहले कभी नहीं देखी, कहां मिली तुम्हें?" शरमन बोला " वह इन मैदान में झाड़ियों के बीच दबी थी, मुझे लगा कुछ सुराग शायद मिले, पर लगता है ये पहले से वहां दबी होगी, पर इसके पत्थर में कुछ तो खास है। कादंबरी मूर्ति के पास गई और बोली, "क्या खास है इस मूर्ति में? मुझे तो कुछ नहीं लगता।" शरमन बोला "अभी तो मुझे भी कुछ पता नहीं, छोड़िए अब आप ये बताइए की हमारे साथ चलने का क्या दिन तय किया है, अब हम यहां आपको अकेले नहीं रहने देंगे, और वैसे भी आपको बेंगलुरु आए हुए भी समय हो गया।"

सुचिता ने प्यार भरी नजरों से शरमन की तरफ देखा, जैसे शरमन ने उसके मन की बात समझ ली थी, वह भी थोड़े दिन के लिए अपनी अम्मा को साथ ले जाना चाहती थी, ताकि उनका मन हल्का हो सके। उसने भी मां को प्यार से कहा " अम्मा अपनी बेटी का घर अभी तक आप लोगों ने नहीं देखा, इस बार तो मैं आपको साथ ले के ही जाऊंगी"। कादंबरी कुछ नहीं बोली बस इतना ही कह सकी " साइंस कमिटी ने पुलिस को मिसिंग रिपोर्ट लिखवाई है तो मुझे 3-4 दिन तो यहां रुकना ही पड़ेगा, जब तक उनके सवाल जवाब खत्म न हो जाएं। शरमन बोला "मां पुलिस की करवाई तक हम भी यहीं रुकेंगे, आप फिक्र न करें।"

रात का खाना खाने के बाद कादंबरी अपने कमरे में चली गई और शरमन और सुचिता वहीं हाल में बैठ कर बातें करने लगे। सुचिता शरमन से बोली " क्या तुम हमसे कुछ छुपा रहे हो? शरमन बोला "नहीं ऐसा तो कुछ भी नहीं, तुम्हें ऐसा क्यों लगा?"

सुचिता बोली "तुम जब नींद से उठे तो थोड़ा परेशान से दिख रहे थे, इसीलिए पूछा, अगर कुछ है तो अभी बता दो, मैं अम्मा को नहीं बताऊंगी।"

शरमन कुछ सोचते हुए बोला " नागेश्वर की बातें सुनकर मुझे ऐसा लगा जैसे साइंस कमिटी मिसिंग रिपोर्ट के साथ ये लिखवा रही है कि तुम्हारे अप्पा प्रयोग की असफलता बर्दाश्त नहीं कर सके और सबको बिना बताए कहीं चले गए। इस तरह वह पुलिस के सामने इस अनसुलझी पहेली को छुपा पाएंगे, वैसे भी कोई नहीं जानता कि आखिर में तुम्हारे अप्पा है कहां? और पुलिस को समझाना तो और भी मुश्किल होगा क्योंकि कोई अभी नहीं जानता कि आखिर वह प्रयोग था क्या?"

सुचिता एक पल को हैरान थी, वह आवेश में आकर बोली "तो क्या तुम कहना चाहते हो कि मेरे अप्पा कायर थे और एक प्रयोग की

असफलता ने उन्हें इतना परेशान कर दिया कि वह कहीं भाग गए या उन्होंने आत्महत्या कर ली।"

शरमन बोला " ये सब जानते हैं कि ऐसा नहीं हुआ है, पर अभी हमारे पास इस बात का कोई पुख्ता सबूत नहीं कि आखिर प्रोफ़ेसर हैं कहां और अगर जिंदा है तो कहां हैं? सुचिता तुम ये सोचो की पूरी 5 इमारतें तुम्हारे अप्पा के साथ गायब हुई हैं और उनका मलबा तक नहीं मिला। क्या समझा पाएगा कोई पुलिस को या किसी और को भी?"

सुचिता थोड़ी नरम लहजे में बोली "मैं जानती हूं, पर मेरे अप्पा कायर नहीं हैं, और मैं ये सच एक दिन सारी दुनिया के सामने ले के आऊंगी"।

इसके बाद शरमन ने सुचिता का हाथ अपने दोनों हाथों के बीच लिया और बोला "मैं नहीं हम, ये सच सारी दुनिया के सामने ले आयेंगे"।

सुचिता शरमन के गले लग के रोने लगी। शरमन ने उसे बाहों में लिया और सांत्वना देने लगा, पर थोड़ा परेशान वह अब भी था, फिर वे दोनों अपने कमरे में सोने चले गए और हॉल के अंधेरे में बस वह मूर्ति ही थी जो अपना हल्का प्रकाश बिखेर रही थी।

रात का समय था, 4 बजने वाले थे, पर सुचिता की आंखों में नींद न थी, वह अप्पा के साथ बिताई अपनी प्यारी यादों में खोई हुई थी। कैसे अप्पा ने शरमन को उनकी कास्ट का नहीं होने के बाद भी अपनाया था, शरमन ने भी अपनी साइंस की गहरी नॉलेज से उनका दिल जीत लिया था। यही सब सोचते हुए उसे नींद आने ही वाली थी की शरमन को उसने बैचेनी से करवट बदलते हुए देखा उसका चेहरा पसीने में भीग गया था, उसने शरमन को जोर से हिलाया और शरमन अचानक जैसे किसी बहुत बुरे सपने से बाहर आ गया। उसने शरमन को पूछा "क्या हुआ तुम्हें, कोई बुरा सपना देखा क्या?" शरमन बोला "फिर वही सपना, जो मुझे दिन में भी आया था।" सुचिता ने पूछा "क्या देखा सपने में?"

शरमन ने घबरा कर कहा " सूचि ऐसा लग रहा जैसे ये सपना है ही नहीं, किसी अनहोनी की आहट है, जैसे लाखों लोग पानी में डूब रहे हों, समंदर ने जैसे धरती पर आ कर सब कुछ तहस नहस कर दिया हो।

सुचिता बोली " वैसे भी तुम अप्पा के कारण बहुत परेशान हो, हो सकता है कि इसी कारण तुम्हें ये सपना आ रहा हो, क्योंकि एक परेशान दिमाग हमेशा डरावने सपनों का जाल ही बुनता है। तुम मन को शांत करो और सो जाओ। वैसे भी ऐसी बातें एक brilliant scientist को शोभा नहीं देती।" कहकर वह मुस्कुराने लगी। शरमन फिर सो गया और सुचिता उसके बालों में हाथ फिराने लगी।

सुबह दोनों देरी से उठे, तब तक कादंबरी नहा के पूजा पाठ कर रही थी। वह ब्रश ही कर रहे थे कि डोर बेल बजी, क्योंकि कादंबरी पूजा में व्यस्त थी, सुचिता ने दरवाजा खोला, सामने लोकल पुलिस थी, उन्होंने

पुलिस को अपने अपने स्टेटमेंट दिए, कादंबरी का स्टेटमेंट पुलिस ने लेने की जरूरत भी नहीं समझी, क्योंकि उनके लिए बस ये एक मिसिंग कैसे था, जिसे वह आम लोगों के केस की तरह ही ट्रीट कर रहे थे। पुलिस वैसे भी साइंस कमिटी के स्टेटमेंट ले चुकी थी तो उन्हें वहां समय गंवाने में कोई दिलचस्पी न थी।

जब तक कादंबरी ने पूजा खत्म की, पुलिस वहां से जा चुकी थी। कादंबरी ने सुचिता को पूछा " कौन था"? वह बोली "अम्मा पुलिस थी स्टेटमेंट लेने आई थी।" कादंबरी बोली "लेकिन मुझसे तो कुछ पूछा ही नहीं" सुचिता बोली "अम्मा वैसे भी हमारे पास कुछ बताने को है ही नहीं, हममें से उस रात का सच कोई भी नहीं जानता, तो हम क्या बता सकते हैं पुलिस को जो उनको अप्पा को ढूंढने में मदद करे"।

कादंबरी को न चाहते हुए भी सुचिता की बात से सहमत होना पड़ा, वैसे भी वह नहीं चाहती थी कि ज्यादा लोगों को इस बात का पता चले और पड़ोसी उससे बार-बार इस घटना के बारे में पूछने आएं, सो उसने कह दिया "बेटा अब हम आज शाम ही बंगलौर के लिए निकलेंगे"। सुचिता और शरमन भी यही चाहते थे, सभी मिल कर सामान पैक करने लगे। कादंबरी और सुचिता घर छोड़ने से पहले रंगनाथन को याद कर जी भर के रो ली। शरमन ने याद से उस मूर्ति को भी बैग में रख लिया, जो उसे मैदान में मिली थी। टैक्सी शरमन ने घर के बाहर ही बुला ली और luggage taxi में रख कर वह एयरपोर्ट की ओर चल दिए।

Airport जाते समय भी सबके दिमाग में कुछ पुरानी यादें, कुछ पुराने किस्से ही चल रहे थे। कादंबरी सोच रही थी "कैसे रंगनाथन एक साइंटिस्ट होकर भी बड़े जिंदादिल इंसान थे, बुध्दिबल तो ऐसा था की सारे साथी उनकी बुद्धि का लोहा मानते थे, शरमन तो जैसे उन्हीं की प्रतिकृति है। अचानक जैसे सब कुछ पीछे छूट गया, कभी सोचा भी न था की इस तरह रंगनाथन अलविदा हो जायेंगे की उनकी मौत ही एक बड़ी पहेली की तरह सामने आएगी।

ख्यालों में कब एयरपोर्ट आ गया, कादंबरी को पता भी न चला। उसके ख्याल भी तब टूटे, जब सुचिता बोली "अम्मा आपका सब सामान आ गया न, एक बार देख लो"।उसने सामान की गिनती की सारे बैग शरमन ने उतार लिए थे।

फ्लाइट से उतर के वे टैक्सी लेकर घर पहुंचे, बेंगलुरु तब उतनी डेवलप न थी, वे जल्दी ही घर पहुंच गए। सुचिता और शरमन ने जैसे बड़े प्यार से इसे सजाया था। गेट खोलते ही दोनों तरफ एक छोटा बगीचा, जिसमे छोटे छोटे फूल और एक छोटा किचन गार्डन था। मुख्य द्वार पर कुछ पुरानी आकृतियां थी, जो सुंदर दिख रही थी। हॉल से लग के ही किचन था और अंदर 2 कमरे, जिसमे से एक bed room और दूसरा गेस्ट रूम था। सारा सामान करीने से रखा गया था, उसे सुचिता पर गर्व

हो रहा था कि पार्ट टाइम जॉब करते हुए भी उसने घर को अच्छे से संभाल रखा था।

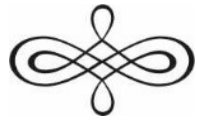

4. 4. प्रलय का दिन

कादंबरी का मन धीरे धीरे सुचिता के साथ लगने लगा, शरमन भी उनका मां की तरह ख्याल रखता था। वह बाहर लगे किचन गार्डन और फूलों का बहुत ध्यान रखती और उनको ही अपने बच्चों की तरह दुलार करती। उसकी दिली इच्छा थी कि सुचिता और शरमन अब उसको नानी बना दें और एक छोटा फूल उन सबकी जिंदगी को गुलजार कर दे, असल में वह रंगनाथन को भूलने का जरिया ढूंढ रही थी, उसे रह रह के रंगनाथन के साथ बिताए पल याद आते थे। यूं सुचिता और शरमन ने उसका ख्याल रखने में कोई कसर न छोड़ी थी, वे उसको छोड़ कर कहीं घूमने भी नहीं जाते थे। एक दिन उसने सुचिता से अपने मन की बात कह ही दी " सुचिता अब तुम लोग भी कहीं घूम के आओ, और अपने परिवार को बढ़ाने की सोचो। सुचिता बोली " अम्मा हम अभी आपको छोड़ के कहीं नहीं जाना चाहते, और वैसे भी जब तक मैं अप्पा के गुमशुदा होने का पता नहीं लगा लेती, मुझे करार नहीं आएगा। कादंबरी सन्न रह गई, उसे सुचिता के शब्दों में बड़ी दृढ़ता दिखी। उसने सुचिता से कहा " बेटा अब ये क्या जिद पकड़ ली तूने, क्या शरमन को ये बात पता है? सुचिता बोली " हां अम्मा, और वह खुद भी कह रहे थे कि जब से वह मूर्ति इस घर में लाए हैं, ऐसा लगता है कोई अनकहा राज उसके साथ चला आया है, मैंने तुम्हें नहीं बताया, पर रात में उठ के बैठ जाते हैं। मैं कहती भी हूं कि क्यों न इस मूर्ति को किसी तालाब में विसर्जन कर दें, पर शरमन का कहना है की अप्पा की मौत का राज इसी मूर्ति में है और एक दिन यही हमें सच तक पहुंचाएगी"।

कादंबरी को सुचिता की बात कुछ समझ नहीं आ रही थी। उसे आए छह महीने हो गए थे, लेकिन सुचिता और शरमन ने कभी इस तरह का कोई जिक्र न किया, शायद वह उसका दिल नहीं दुखाना चाहते थे। वह चाहती थी कि वह भी उनकी मदद कर सके, सो वह फिर से एक बार पुरानी बातें सोचने लगी, उसे अब रंगनाथन से ज्यादा बेटी के परिवार की चिंता थी, वह नहीं चाहती थी कि सुचिता और शरमन, रंगनाथन की गुमशुदगी के अनसुलझे राज के पीछे अपनी जिंदगी को यूं बर्बाद करे।

उसने कुछ सोच के कहा " सुचि जब हम अंडमान निकोबार गए तो एक दिन तेरे अप्पा मुझे बिना बताए कहीं गए थे, मेरे पूछने पर बस इतना ही कहा कि जब पिछले साल मैं यहां आया था तो किसी दोस्त ने

मेरी बड़ी मदद की थी, तो उसी से मिलने जा रहा हूं। मैंने कहा मैं भी चलती हूं, तो बोले , न तुम आराम करो मैं शाम तक आ जाऊंगा"।

वहां से आने के बाद वह बड़े खुश दिखे मैंने पूछा भी, पर उन्होनें टाल दिया। मुझे लगता है, शायद ये मूर्ति वहीं से आई है। सुचिता की आंखों में चमक आ गई , "मतलब हमें इस मूर्ति का राज अंडमान निकोबार जाकर ही मिल सकता है। अम्मा क्या कोई और भी था जो आपके साथ वहां किसी गाइड या केयरटेकर की तरह मदद के लिए था। कादंबरी ने सोच के बोला " हां एक गाइड तो था, कुछ शिवम...। नहीं नहीं परमशिवम नाम था उसका। वह दिगलीपुर के किसी कॉटेज का केयरटेकर था"।

सुचिता बड़ी खुश हो गई, उसने कहा अम्मा "आपने पहले ये सब क्यों नहीं बताया? कादंबरी बोली " मुझे कहां खुद ये पता था और मैं तो अभी भी निश्चितता से ये नहीं कह सकती कि ये मूर्ति वहीं से है, ये तो बेटा बस एक अनुमान है, जो मैंने अभी कहा।"

सुचिता बोली "अब जो भी हो, मां तुमने एक आशा की किरण दिखाई है, आज ही शाम को मैं शरमन से बात करती हूं"।

कादंबरी बोली " बेटा मैं भी एक बार हैदराबाद जा के तुम्हारे पिताजी के PF और accounts का हिसाब खत्म कर के आती हूं, वैसे भी मुझे छह महीने हो गए, तुम लोगों के साथ समय कैसे निकला पता ही न चला पर अब मैं उस घर में थोड़े दिन तुम्हारे अप्पा की यादों के साथ रहना चाहती हूं और इसी बहाने एक बार और तुम्हारे अप्पा के सब रिकॉर्ड ढूंढती हूं, शायद कोई सुराग मिले"।

सुचिता नहीं चाहती थी कि कादंबरी फिर से हैदराबाद जाए, पर उनकी इच्छा को देखते हुए वह ना नहीं कह सकी। बस इतना ही बोल पाई कि "मां शरमन को आने दो फिर हम तसल्ली से बात करते हैं"।

शाम को शरमन के आने के बाद जब सब रात के खाने को बैठे तो सुचिता ने शरमन को सब बातें बताई। शरमन तो जैसे कोई आशा की किरण के ही इंतजार में था, बोला मेरी 25th से 31st December की छुट्टियां हैं बस अम्मा को 25th को छोड़ कर हम 27th December को अंडमान के लिए निकल लेंगे। सुचिता तुम भी पहले से ही छुट्टियों के लिए अप्लाई कर दो। सुचिता ने हां में सिर हिलाया, पर कहते हैं ना भगवान को हंसाना हो तो उन्हें अपना कल का प्लान बता दो, इन लोगों ने भी शायद यही गलती कर दी थी। उन्हें नहीं पता था कि भविष्य अपने प्लान पहले ही बना चुका था। 25th December को शरमन कादंबरी को छोड़ने हैदराबाद आया, साइंस सेंटर फिर से बन कर तैयार हो चुका था, कोई देख कर नहीं कह सकता था कि यहां कोई हादसा भी हुआ था, सभी प्रोफेसर लंबी छुट्टी होने के कारण कहीं न कहीं जाने की तैयारी कर चुके थे। वह कादंबरी को घर छोड़कर, नागेश्वर के घर गया, उसे नागेश्वर से कुछ जरूरी बात करनी थी। नागेश्वर ने कादंबरी और सुचिता के हाल

चाल पूछने के बाद बताया "कादंबरी के जाने के बाद कोई परमशिवम नाम का आदमी 3-4 बार उसकी तलाश में यहां आया था, पर तुम्हारा पता या फोन नम्बर न होने के कारण मैं तुम तक ये ख़बर पहुंचा नहीं पाया। वह किसी मूर्ति के बारे में पूछ रहा था, पर मुझे तो कुछ मालूम न था तो मैं बता नहीं पाया"। शरमन वह नाम सुनकर चौंक गया, सुचिता को भी कादंबरी ने यही नाम बताया था और मूर्ति की बात सुनकर तो उससे पक्का यकीन हो गया कि कादंबरी का अंदाजा सही था, मूर्ति अंडमान से ही आई थी। उसने नागेश्वर को मूर्ति के बारे में अभी कुछ भी बताना उचित न समझा और उसे धन्यवाद देते हुए कहा, "वैसे आप लोग यहीं हैं छुट्टियों में या कहीं जा रहे हैं? नागेश्वर बोला "इस बार सभी प्रोफेसर्स ने बैचलर घूमने का प्रोग्राम रखा है और हम सभी अंडमान निकोबार जा रहे हैं"। शरमन हंसते हुए बोला " अरे वाह, हम भी 27th को वहीं जा रहे, पर फैमिली के साथ। नागेश्वर ने भी ठहाका लगाकर कहा, "अरे भाई सारे प्रोफेसर बैचलर टूर सुनकर आज शाम की ही फ्लाइट की टिकट करा लिए"। दोनों हंस दिए और शरमन अंडमान में मिलने का बोलकर वहां से विदा लिया। कादंबरी के घर की तरफ आते वक्त वह यही सोच रहा था कि अब जल्दी ही वह प्रोफेसर रंगनाथन की गुमशुदगी और मूर्ति से जुड़े राज जन पाएगा, क्योंकि नागेश्वर की बातों से ये तो साफ था कि परमशिवम मूर्ति के रहस्य के बारे में बहुत कुछ जानता है और अंडमान पहुंचकर उसे बहुत कुछ पता लग सकता है, वैसे भी छह महीने से वह मूर्ति पर अलग अलग तरीके से रिसर्च कर यह पता लगाने की कोशिश कर रहा था कि ये आखिर किस धातु से बनी है। उसे ये भी ख्याल बार बार आ रहा था कि आखिर परमशिवम को ये मूर्ति वापस क्यों चाहिए? अब इन सब बातों के बारे में सिर्फ परमशिवम ही बता सकता था। उसे अपनी मूर्खता पर गुस्सा आ रहा था कि यहां से निकलते वक्त उसने नागेश्वर को कोई कॉन्टैक्ट नंबर क्यों नहीं दिया। खैर अब जल्दी ही सब पता चल जायेगा ये सोचते हुए वह घर पहुंच गया। उसने बेल बजाई और कादंबरी ने दरवाजा खोला, वह बोली "शरमन पड़ोसी कह रहे थे कि कोई आदमी हमें पूछता हुआ 3-4 बार आया था, नागेश्वर ने तुम्हें कुछ बताया क्या?" उसने कादंबरी को नागेश्वर के द्वारा कही हुई बात बताई और कहा अम्मा अब ये साबित हो चुका है की मूर्ति अंडमान से ही आई है और हमें सारे राज जल्दी ही पता चल जायेंगे। वैसे भी कल मैं यहां सुबह ही निकल जाऊंगा और परसों हम अंडमान में होंगे। रात का खाना खाने के बाद कादंबरी तो सो गई, पर शरमन की आंखों में नींद न थी, उसकी जिज्ञासा काफी चरम पर थी और वह मूर्ति के बारे में ही सोच रहा था, सोचते सोचते उसे नींद आ गई, तभी वह सपना जो उसने रंगनाथन की गुमशुदगी के बाद देखा था, उसे फिर आया, समंदर में उठती बड़ी लहरें जैसे सब कुछ निगलने को बेताब थी, सभी लोग मदद के लिए पुकार रहे थे पर कोई उनकी मदद नहीं कर पा रहा था, सब उस सैलाब में बह कर जा रहे थे, तभी उसे उस भीड़ में कोई दिखा जो पीछे से जाना पहचाना सा लग रहा था, वह सबसे माफी मांग रहा था और छाती पीट पीट कर रो रहा था। जब इस शख्स ने शरमन की तरफ मुंह किया तो शरमन काफी घबरा गया क्योंकि वह

प्रोफेसर रंगनाथन थे, शरमन की आंख डर के मारे खुल गई और वह पूरा पसीने में लथपथ हो गया। उसे लगा जैसे कोई बड़ी अनहोनी होने जा रही है। घड़ी में 6:30 AM हो चुके थे, उसने उठना ही ठीक समझा वैसे भी इस सपने के बाद उसकी आंखों से नींद जा चुकी थी उसकी फ्लाइट 10:00AM की थी और उसने तैयार होना ही बेहतर समझा। कादंबरी 7:00AM उठी और शरमन को जगा देख बोली "क्या हुआ बेटा रात में सोए नहीं? क्या परेशान कर रहा है तुम्हें?"

शरमन बोला अम्मा मुझे लगता है जैसे समंदर धरती को निगलने को तैयार खड़ा है और सभी लोग इधर उधर भाग रहे हैं बड़ी बड़ी लहरें लोगों को निगलने को बेताब हैं लोग सैलाब में बह जा रहे हैं और मैं कुछ नहीं कर पा रहा। आज मैंने देखा कि उस भीड़ में एक शख्स छाती पीट पीट कर रो रहा है और जानती हो अम्मा वह कौन था? कादंबरी चुप थी, क्योंकि शायद उसे नाम पता था, शरमन ने एक लंबी सांस ली और कहा "हां अम्मा वह प्रोफेसर साहब थे"।

कादंबरी बोली "बेटा ये सब तुम्हारा वहम है, सपने सच नहीं होते, रंगनाथन के प्रति तुम्हारा लगाव उन्हें भूलने नहीं दे रहा। तुम बैठो मैं तुम्हारे लिए चाय बना के लाती हूं, वैसे भी 8 बजने वाले हैं, मैं चाय बनाती हूं तब तक तुम टीवी देख लो"। शरमन ने टीवी चलाई और NEWS सुनने लगा, कादंबरी चाय बनाने में लग गई, तभी टीवी पर ब्रेकिंग news आने लगी। इंडोनेशिया, सुमात्रा, भारत के तटीय इलाकों और अंडमान निकोबार के पास अचानक उठी सुनामी से 30ft ऊंची समंदर की लहरों ने तटीय इलाकों को अपनी चपेट में ले लिया। 9.1 रिएक्टर स्केल का भूकंप समंदर में आया था जिसकी वजह से लाखों लोगों के हताहत होने की खबर थी।

शरमन बुरी तरह कांपने लगा, ये बिलकुल वैसा ही था जैसा उसने सपने में देखा था, बाहर तेज बारिश शुरु हो गई थी। कादंबरी कप में चाय भर रही थी और ये समाचार देखते ही उसके हाथ से चाय की तपेली छूट कर गिर गई। ये सब अभी तो शरमन ने उसे बताया था। शरमन बस बुत की तरह टीवी को देख रहा था, उसे लगा कि उसे तो इस आपदा के बारे में मालूम था, पर फिर भी वह किसी को बचा नहीं पाया। ये उसके लिए किसी सदमे से कम नहीं था। उसने कादंबरी की तरफ देखा दोनों एक दूसरे से कुछ कह न पाए। शरमन से कादंबरी की आंखें जैसे पूछ रही हो क्या इसके लिए सचमुच प्रोफेसर रंगनाथन जिम्मेदार थे?, तभी आस पड़ोस से औरतों और बच्चों के रोने की आवाजें आने लगी। कादंबरी ने दरवाजा खोला तो पड़ोस वाली श्रीमती शर्मा रोते हुए बोली "25 लोगों के प्रोफेसर्स के ग्रुप में Mr. Sharma भी अंडमान गए थे, और उन लोगों से कोई कॉन्टैक्ट करने का तरीका भी नहीं। समंदर का भयावह रूप देख के ही श्रीमती शर्मा उनके साथ कुछ अनहोनी का अंदाजा लगा चुकी थी। कॉलोनी में और भी घरों में चीख पुकार मचने लगी थी।

25 घर उजड़ चुके थे, कोई भी न अपनों की खैर खबर की जानकारी न किसी को दे पा रहा था, न कहीं से खबर आ सकती थी। सारे लैंडलाइन डेड हो गए थे और कहीं किसी के पास मोबाइल भी थे तो सिग्नल नहीं आ रहे थे। बाहर कड़कती बिजलियां और तूफान जैसे किसी बड़े भयंकर अपशकुन की सूचना दे रहे थे। बिजली भी चली गई थी और पूरी कॉलोनी अंधेरे में डूब गई। अब किसी को रोशनी की आस भी न थी, क्योंकि उनके घर के चिराग तो कहीं दूर शायद अपनी जिंदगी बचाने का संघर्ष कर रहे थे। शरमन भी परेशान था, न जाने सुचिता किस हाल में होगी, वह उसे अपने सपने और परमशिवम के बारे में बताना चाहता था, वह बताना चाहता था कि उसे एक उम्मीद की किरन परमशिवं के रूप में नजर आई है। तभी कुछ सोचकर उसका दिल बैठ गया। वह कादंबरी के पास आया और पूछा, "अम्मा परमशिवम आपको अंडमान निकोबार में मिला था न"! कादंबरी ने उसकी ओर देखा और उसके प्रश्न का कारण समझ उसकी आंखों में आसूं आ गए। तो क्या परमशिवम भी इस हादसे में नहीं बचा होगा? उसने खुद से ही पूछा, क्योंकि भारत के सारे तटीय इलाके खास तौर पर अंडमान निकोबार इसमें बर्बाद हो चुके थे। लोगों के बचने की संभावना कम ही थी। उसने शरमन को पूछा "क्या अब रंगनाथन के बारे में जानने का और कोई तरीका नहीं बचा?" शरमन के पास भी कहां इस बात का जवाब था, बस इतना ही बोल सका "अम्मा अब हम इंतजार के अलावा कुछ नहीं कर सकते"।

कादंबरी बोली "बेटा अच्छा हुआ जो तुम लोग पहले वहां नहीं गए वरना शायद तुम भी कभी वापस....."। इतना कहकर वह चुप हो गई, घर में बने मंदिर की ओर देखकर उसने प्रणाम किया। शरमन भी कादंबरी की बात सुनकर चुप हो गया। घर में सन्नाटा पसर गया, बाहर से चीख पुकार की आवाज अब भी रह रहकर आ रही थी।

कोई 10 घंटे बाद बिजली आ गई। कादंबरी और शरमन ने खाना तो आज मोमबत्ती की रोशनी में ही खाया। बिजली के आते ही शरमन अपने मोबाइल की तरफ लपका, उसमें अब भी सिग्नल नहीं आ रहा था। शरमन ने मोबाइल रिस्टार्ट किया, और 2 हल्की डंडियां दिखने लगी, शरमन ने सुचिता को फोन लगाने में एक पल की भी देर ना की। सुचिता ने बैचेनी भरे स्वर में कहा, "शरमन वहां सब ठीक है!" जवाब में शरमन ने परमशिवम और प्रोफेसर्स के अंडमान निकोबार में फंस जाने की बात बताई। सुचिता ने भी फिर वही बात दोहराई " क्या हम अप्पा के बारे में कभी नहीं जान पाएंगे? शरमन निरुत्तर हो गया, उसने सुचिता से कहा "एक बार हमें अंडमान जाना तो होगा, शायद दिगलीपुर में कोई हो जो इस बारे में कुछ जानता हो, पर अभी हम इंतजार के अलावा कुछ नहीं कर सकते। जब तक सब कुछ सामान्य नहीं होता, हमें रुकना पड़ेगा।"। सुचिता ने कहा "तुम वापस कब आ रहे हो?" शरमन बोला मुझे लगता है एक दो दिन में फ्लाइट्स फिर से उड़ान भरना शुरू कर देगी तो मैं पहली फ्लाइट से तुम्हारे पास आ जाऊंगा।" मोबाइल में सिग्नल फिर चला गया और सुचिता और कादंबरी की बात न हो पाई। शरमन ने बार बार फोन लगाने की कोशिश की, लेकिन फिर वापस सुचिता का फोन

नहीं लगा। कादंबरी को यकीन हो चला था कि अब सच कभी सामने नहीं आएगा। उसने टीवी पर देखा था कि ये इतनी भयानक त्रासदी थी जो लगभग 2.25 लाख लोगों को काल के गाल में ढकेल चुकी थी, इसमें परमशिवम का बचना भी नामुमकिन सा ही था। पर शरमन अभी भी एक बार अंडमान जाने की जिद पर अड़ा था।

2 दिन बाद फ्लाइट्स अपने पुराने समय से उड़ने लगी, शरमन कादंबरी को साथ ले जाना चाहता था पर कादंबरी वहीं कुछ दिन और रहना चाहती थी। शरमन फ्लाइट पकड़ कर बेंगलुरु आ गया और सुचिता तो जैसे उसी के इंतजार में थी, एयरपोर्ट से वह निकला ही था की सुचिता उसे बाहर ही मिल गई। सुचिता दौड़ के उसके गले लग गई और कुछ समय के लिए बस दोनों चुपचाप एक दूसरे से लिपट कर खड़े रहे। सुचिता टैक्सी साथ ही लाई थी तो दोनों उसी टैक्सी में घर की तरफ रवाना हो गए। कादंबरी और परमशिवम के बारे में बातें करते करते घर कब आ गया, पता ही न चला। उन्होंने अंडमान होली के पहले लगभग 20 मार्च के आस पास जाने का निश्चय किया क्योंकि बाढ़ प्रभावित इलाके में बाढ़ के बाद महामारी फैलने का डर रहता है और जब सूरज की गर्मी बढ़ने लगती है तो बीमारियां भी धीरे धीरे खत्म होने लगती हैं। होली पर उन्हें छुट्टियां भी आराम से मिल सकती थी, और वैसे भी उन्हें परमशिवम के जिंदा होने की संभावना कम ही लग रही थी।

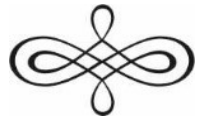

5. 5. डायरी के राज़

23 मार्च 2005 को सुचिता और शरमन दिगलीपुर पहुंचे। उन्होंने वह रहस्यमयी शिव मूर्ति भी साथ ले ली थी। कादंबरी से उन्होंने परमशिवम का पता भी ले लिया था। दिगलीपुर गांव पहुंचने के बाद वे कादंबरी के बताए पते पर पहुंचे, सड़कें अभी भी पूरी तरह बनी न थी, रास्ता अभी भी कच्चा ही था। उस पते पर जब वह पहुंचे तो देखा की एक पुराने से कॉटेज की मरम्मत चल रही है और वहां कोई जवान सा लड़का खड़ा था, उन्होंने उसे पूछा क्या परमशिवम नाम का कोई आदमी यहां रहता है, उसने एक पहाड़ की ओर इशारा किया और बोला " जब से सुनामी आई है,वह पहाड़ पर बने शिव मंदिर में ही अपना वक्त गुजारते हैं, हफ्ते में एक बार इस कॉटेज की मरम्मत का हाल देखने आ जाते हैं, वैसे भी इस कॉटेज के मालिक और उसका परिवार तो सुनामी में बह गया अब बस परमशिवम ही बचे हैं"। परमशिवम के जिंदा होने की खबर शरमन और सुचिता के लिए राहत भरी थी। उन्हें उससे मिलने की जल्दी थी, तो दोनों अपना सामान वहीं कॉटेज के पास बने स्टोर रूम में रखकर पहाड़ पर बने मंदिर की ओर चल दिए। शरमन ने शिव मूर्ति भी साथ ले ली थी, क्योंकि परमशिवम ही उस रहस्य से भरी मूर्ति के राज को उजागर कर सकता था। धूप की वजह से वे दोनों जल्दी ही थक गए पर परमशिवम से मिलने की आतुरता ने उनके कदमों को थकने न दिया। जब वे मंदिर पहुंचे तो सूरज सर पर आ चुका था। मंदिर से दूर दूर तक फैला समंदर साफ दिखता था और समंदर से आती ठंडी हवाएं उस जगह को और भी सुकून भरा बना रही थी। शरमन ने वहां बैठे व्यक्ति जिसकी उम्र कुछ 40 साल रही होगी, को परमशिवम कह के पुकारा, वह व्यक्ति पीछे मुड़ा और शरमन के हाथ में रखी मूर्ति को देख पागलों की तरह उसकी और दौड़ा, उसने बारंबार उस मूर्ति को दंडवत प्रणाम किया और अपने किए की माफी मांगने लगा। उसका ये व्यवहार सुचिता और शरमन की समझ से परे था, पर शरमन को उसके इस व्यवहार से वह सपना याद आ गया जिसमें प्रोफेसर रंगनाथन भी कुछ इसी तरह लोगों से माफी मांग रहे थे।

शरमन ने शिव मूर्ति को मंदिर के बाहर बने एक छोटे से आलिए में रखा और फिर परमशिवम जो कि, अभी भी दंडवत लेटा हुआ रो रहा था और माफी मांग रहा था, को उठाया। सुचिता ने मंदिर के प्रांगण में रखे मटके में से पानी निकाल कर पानी का ग्लास परमशिवम को दिया और

शरमन ने उसे चुप कराया और शांत होने को कहा। थोड़ी देर वहां सन्नाटा रहा, फिर परमशिवम बोला "आपने ये मूर्ति लाने में बड़ी देर कर दी साहेब, देखिए इसके प्रकोप से धरती भी कांप गई और समंदर का कहर चारों तरफ टूट पड़ा। प्रोफेसर रंगनाथन भी न रहे, ये मुझे जब हैदराबाद के science centre में गया तो पता चला। आप शायद उनकी बेटी सुचिता और आप उनके दामाद शरमन हो। शरमन और सुचिता उसके मुंह से अपने परिचय सुन कर चौंक गए।

शरमन एक वैज्ञानिक था और उसके लिए ये मानना मुश्किल था कि ये छोटी सी मूर्ति इतनी तबाही मचा सकती है, पर अब तक जो उसने अनुभव किया था वह उसे परमशिवम की बात मानने पर मजबूर कर रहा था। उसने उसे शुरू से सब कुछ बताने को कहा जो वह जानता था।

परमशिवम ने कहा " साल 2003 में पहली बार प्रोफेसर रंगनाथन अंडमान आए थे, तब वे अकेले ही आए थे और हमारे कॉटेज में रुके थे। किसी साइंस प्रोजेक्ट में उन्हें सोए हुए ज्वालामुखियों के बारे में उन्हें अध्ययन करना था, इसके लिए वे नारकुंडा में स्थित सुषुप्त ज्वालामुखी का अध्ययन करना चाहते थे, उन्होंने मुझसे वहां जाने का रास्ता पूछा, क्योंकि वहां खुद की boat से ही जाया जा सकता था तो वे 2-3 दिन का खाने पीने का सामान और कुछ पैसे लेकर नारकुंडा चल दिए। मैं तब उनके साथ नहीं गया था, पर वहां उनके साथ क्या हुआ उन्होंने अपनी डायरी में सब कुछ लिखा था जो कि उनसे यहीं छूट गई।" सुचिता बोली "अप्पा की आदत थी अगर कहीं कुछ उन्हें रोचक लगता था या कुछ नया खोजते थे तो वह उसे डायरी में लिख लेते थे, पर भुलक्कड़ स्वभाव होने के कारण अक्सर वे ऐसी डायरी कहीं भूल जाया करते थे। दिमाग पर उनका फोटोजेनिक मेमोरी वाला था तो उन्हें वह खोज और वह घटना जैसी की तैसी याद रहती थी।

शरमन ने पूछा क्या वह डायरी अभी भी तुम्हारे पास है। परमशिवम ने कहा, सुनामी के समय हम अपना कीमती और खाने पीने का सामान लेकर इस ऊंचे पहाड़ पर आ गए थे, मैंने वह डायरी भी संभाल ली थी, क्योंकि मुझे मालूम था कि उसमे लिखी बातें भले ही मेरी समझ के परे हो पर वह खोज अनमोल थी। अभी वह डायरी इसी मंदिर के पीछे बने मेरी छोटी सी झोपडी में रखी है, चलिए मैं दिखाता हूं। वे तीनों मंदिर के पीछे की ओर चल दिए। पीछे बनी झोपड़ी में बस एक खाट पड़ी थी और उसके नीचे 3 संदूक थी, उसी में से एक में परमशिवम ने वह डायरी संभाल कर रखी थी। शरमन ने डायरी को देखा, उसमें लिखावट प्रोफ़ेसर रंगनाथन की ही थी, शरमन ने बिना देर किए पढ़ना शुरू किया।

प्रोफेसर रंगनाथन ने सभी घटनाएं date के साथ लिखी थी।

"12 March 2003- आज मैं परमशिवम से मिला, उससे मैंने यहां के सोए हुए ज्वालामुखी जो कि नारकुंडा में स्थित है, उसके बारे में पूछा, बदले में उसने जो मुझे कहानी सुनाई वह मैं भूल नहीं सकता। हजारों वर्षों पहले की बात है, यहां के आदिवासी जिन "पुलुगा" देवता को मानते

हैं, वह बड़े शिव भक्त थे, उन्होंने तपस्या कर के शिवजी को प्रसन्न किया। शिवजी ने उनसे प्रसन्न होकर वरदान मांगने को कहा। पुलूगा देव ने शिवजी से ब्रम्हांड की उत्पत्ति देखने की इच्छा जताई। शिवजी ने उन्हें बताया कि हंडूमन (वर्तमान में अंडमान) नामक जगह पर आकाश से एक जलता हुआ बड़ा सा पिंड गिरेगा, जो धीरे धीरे बढ़ता जाएगा। उसके पूरा ठंडे होने से पहले तुम्हें मेरी मूर्ति का निर्माण करना है और उस पिंड के केंद्र में जो तत्व होगा उससे मेरी तीसरी आंख का निर्माण करना है। उसके बाद कामदहनम के दिन तुम्हें ब्रम्हांड का छोटा रूप वहां बनता हुआ दिखेगा,जिसे मैं खुद तुम्हें वहां समझाने आऊंगा, पर याद रहे कभी भी शिव मूर्ति से उसकी शक्ति अलग न होने पाए, न ये किसी गलत हाथों में जाए, वरना वह शक्ति उस द्वीप पर प्रलय ले आएगी।

पुलुगा देव ने वैसा ही किया और आसमान से जो पिंड गिरा उससे नारकुंडा में एक बड़ा गड्ढा बन गया और वह धीरे धीरे एक सोए हुए ज्वालामुखी में परिवर्तित हो गया। पुलुगा देव ने नारकुंडा में ही शिवजी की मूर्ति उस पिंड से बनाई और उसकी तीसरी आंख उस शक्ति से बनाई जो उस पिंड के केंद्र में थी। होलिका दहन के दिन ब्रम्हांड की उत्पत्ति की घटना उन्हें खुद शिवजी समझाने आये और फिर पुलुगा देव ने इस जगह को एक तिलस्म से बांध दिया जिससे आम आदमी ब्रम्हाण्ड की उत्पत्ति को कभी न देख पाए। कामदहनम का दिन वह ही दिन है जिस दिन शिवजी ने अपनी तीसरी आंख से कामदेव को जलाकर भस्म किया था और ये दिन होलिकादहन के दिन ही आता है। कहते हैं उस जगह पर हर साल ये घटना अपने आप को दोहराती है, हालांकि ये बातें सिर्फ परमशिवम ने " जरावा " जाति के लोगों से सुनी थी, पर देखी किसी ने भी अब तक नहीं थी। कुछ लोगों ने उस तिलस्म को तोड़ने की कोशिश भी की , पर वह फिर कभी जिंदा नहीं लौटे।

रंगनाथन ने आगे लिखा, क्योंकि 5 दिन बाद ही कामदहनम है, मेरी इच्छा है कि एक वैज्ञानिक होने के नाते ये देखूं की ब्रम्हांड आखिर बना कैसे। मैं ये कहानी सुनने के बाद अपनी जिज्ञासा को रोक नहीं पा रहा हूं और अब मैं वहां जाकर रहूंगा। मैंने परमशिवम को पूछा कि क्या उसे वह जगह मालूम है?" उसने न मैं सिर हिलाया, तो मैंने उससे पूछा "कौन मुझे उस जगह के बारे में बता सकता है? उसने बताया " वहां आपको सिर्फ जरावा जाति के लोग ही ले जा सकते हैं"।

13 March 2003- मैंने परमशिवम से मुझे "जरावा" जाति के लोगों से मिलाने को कहा, लेकिन परमशिवम बोला, "साहब उनके कबीले में जाना खतरे से खाली नहीं, पर मेरे बार बार जिद करने पर उसने कहा कि एक दुभाषिया है, जो आपको कबीले के एक व्यापारी से मिला सकता है, जो यहां कभी कभी मजदूरों को लेकर आता है।"

मैंने बिना देर किए उसे हां कर दी और उसे इस काम के लिए कुछ पैसे भी दिए। उसने दुभाषिये जिसका नाम "नामूरी" था, को बुलाया, मैंने नामूरी को जरावा जाति के आदिवासी को मिलने और पुलुगा देव के बारे

में और बताने के लिए वहां के किसी वृद्ध आदमी से बात करने की अपनी इच्छा बताई। उसने कहा पुलुगा देव के बारे में आपको केवल वहां का पुजारी ही बता सकता है, पर उससे मिलने में खतरा बहुत है। अगर जरावा के सरदार को पता लगा तो वह हम में से किसी को नहीं छोड़ेगा। मैंने उसे अपनी सोने की चेन देकर कहा, क्या इससे काम हो जाएगा? उसने उसे हाथ में लेकर अच्छी तरह तोला और कहा, कल रात में आप नारकुंडा आ जाइए, मैं आपको मिलवाता हूं।

14 March 2003- मुझे अब रात का इंतजार है, इतना बैचेन मैं कभी न हुआ जितना आज हूं। एक वैज्ञानिक होकर भी पता नहीं क्यों मुझे पुलुगा देव की कहानी पर विश्वास सा हो चला है। नारकुंडा सिर्फ खुद की नाव से ही जाया जा सकता है, सो मैंने परमशिवम को किसी नाविक से बात करने को कहा। परमशिवम ने मुझे एक नाविक से मिलाया और करीब 10 घंटे की थकाने वाली यात्रा के बाद मैं शाम को 7 बजे नारकुंडा पहुंच गया। वहां न कोई संपर्क का साधन था न कोई पहचान सो मैं रात के करीब 9 बजे तक उनका इंतजार करता रहा। रात को 3 लोग मुझे मेरी ओर आते हुए दिखे। उनमें से एक नामूरी था। नामूरी ने आ के बताया कि एक पुजारी और उसका लड़का भी साथ आया है। पुजारी अंधेरे में एक हाड़ मांस के कंकाल के अलावा कुछ नहीं दिख रहा था। मैंने उससे पुलूगा देव और वह जगह जहां ब्रम्हांड का निर्माण हुआ था, उसके बारे में बताने को कहा। नामूरी ने डरते डरते उन्हें पूछा कि "वह जगह जहां पुलुगा देव ने वह शिवमूर्ति बनाई कहां है"? वह पुजारी भड़क गया और गुस्से में कुछ बोलते हुए वहां से जाने लगा। मेरे पास सोने की अंगूठी थी, उसे उसका भी लालच दिया पर वह रुका नहीं, लेकिन उसका बेटा नामूरी को कुछ बोल के गया। नामूरी बोला "साहब वह बुड्ढा बोल रहा था कि आपको वह जगह बता दी तो अनर्थ हो जाएगा, उसे मरकर नर्क की यातनाएं झेलनी पड़ेगी, पर उसका बेटा वह अंगूठी देखकर तैयार हो गया, उसने 16 की सुबह को यहीं मिलने को बोला है। आप तब तक यहां पास ही एक झोपड़ी है, जहां मजदूर आराम करते हैं, वहां रह सकते हैं। अभी तो कोई काम धंधा नहीं है, तो खाली ही पड़ी है। आप वहां से बाहर न निकलियेगा, मैं रात को आपके लिए खाना ले आऊंगा। रात का अंधेरा और झिंगुरों की आवाज ने माहोल वैसे ही डरावना बना रखा था और वह झोपड़ी जैसे छत थी ही नहीं, बस घास फूस थोड़ा डाला पड़ा था और एक पुरानी खाट थी, मैं उसी पर लेट गया। पहली बार मैंने अंबर के सितारों को इतना साफ देखा था। शहर में ये सुकुन कहां नसीब होता है। 1 दिन वहीं रुकने के बाद वह सुबह भी आई जब नामूरी पुजारी के बेटे कुशना को साथ ले के आया।

16 March 2003- सुबह 9 बजे नामूरी और कुशना साथ में आए वह कुछ रस्सी का बंडल भी कंधे पे लाद कर लाया था। मैंने नामूरी से पूछा ये रस्सी का बंडल किसलिए? मुझे वहीं फांसी लगाने का इरादा है? नामुरी हंसते हुए बोला, साहब कुशना भी आपके साथ आना चाहता है। यहां कहा जाता है कि जो भी उस चमत्कार को देख लेता है, उसे मरने

के बाद स्वर्ग मिल जाता है, और वहां क्या खतरा है किसी को नहीं मालूम तो ये रस्सी हमें किसी भी खतरे से बाहर निकाल सकती है। हम चल पड़े उस अनजान सफर की ओर, जो आज तक न किसी ने किया और न शायद आगे कोई कर पाएगा। यहां कि दंतकथाएं तो यही कहती थी। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए ठंड बढ़ती गई, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि समंदर के पास इतनी ठंड क्यों और कैसे थी?, जबकि हम एक सोए हुए ज्वालामुखी के पास जा रहे थे। आगे हमें पेड़ों के झुरमुट के बीच एक पगडंडी दिखाई दी। ये इतनी संकरी थी कि एक बार में एक ही आदमी इस पर जा सकता था।

झाड़ियों के बीच से जीवों के सरसराने की आवाज आ रही थी। जैसे बहुत सारे सांप एक साथ सरसरा रहे हों, उनके हिस हिसाने की आवाजें साफ सुनाई दे रही थी, मैं अपनी टॉर्च के सहारे , कुशना और नामूरी अपनी लालटेन के सहारे आगे बढ़ रहे थे। दिल १०० की गति से धड़क रहा था और मैं अपने दिल की धक धक उस सन्नाटे में साफ सुन सकता था, तभी चलते चलते ऐसा लगा कि रास्ता खत्म होने वाला है। कुशना ने आगे टॉर्च दिखाने का इशारा किया। जब मैंने टॉर्च की रोशनी आगे की तरफ डाली तो रुह कांप सी गई। हम एक खाई के मुहाने पर खड़े थे और दूसरी तरफ साफ दिखाई नहीं दे रही थी बस बीच में एक पत्थर का पुल दिखाई दे रहा था, उन पत्थरों पर कुछ हिंदी के अंक लिखे थे। कुशना ने नामूरी से कुछ कहा। नामूरी बोला, साहब इस पत्थर के पुल को आज तक कोई पार नहीं कर पाया, ये ही उस तरफ जाने की पहली सीढ़ी है। कुशना ने पहले पत्थर पर पांव रखा ही था कि एक उड़ता हुआ सांप हवा में प्रकट हुआ और उसे काटने को लपका, समय रहते मैंने उसे पीछे न खींचा होता तो वह वहीं ढेर हो जाता। ये पत्थरों पर लिखे अंक कोई पहेली थे और उसे हल करके ही आगे बढ़ा जा सकता था। मैंने आस पास टॉर्च घुमाई पर मुझे कुछ ऐसा दिखाई न दिया जो उस पहेली के बारे में कुछ संकेत दे सके, तभी वहां बिखरे पत्तों पर मेरी नजर पड़ी, उन पत्तों में एक पत्ता उस घने अंधेरे में चमक रहा था, जब उसे उठाया तो उस पर दो संस्कृत श्लोक लिखे मिले, उन श्लोकों को मैंने डायरी में लिखा और सोचने लगा। शरमन ने डायरी में देखा वहां वह दो श्लोक लिखे हुए थे। उस पहेली को सुलझाने के बाद हम उस पत्थर के पुल को पार कर गए। मैं जानकर के इस डायरी में उस रहस्य को नहीं लिख रहा हूं कि वह पहेली को मैंने कैसे सुलझाया क्योंकि ये दुनिया को में खुद बताना चाहता हूं। ये जब शरमन पढ़ रहा था तो सुचिता की आंखों में आसूं आ गए, वह शरमन को बोली, काश ये हम सब अप्पा के मुंह से सुन पाते। शरमन ने आगे पढ़ना शुरू किया। आगे हमें एक "U" आकार की चट्टान दिखी, ऐसा लगता था कि जैसे किसी जानवर ने मुंह बंद कर रखा हो, उसे भी खोलने के लिए वहां लिखा एक संस्कृत श्लोक ही काम आया, इसके आगे तेजाब की नदी थी जिसमे ऊपर सेतेजाब कि धार रह रह के निकलती थी, उसे पार करने के बाद पांच गुफाओं में से एक गुफा थी जो हमें उस चमत्कार की तरफ ले जाती थी। अब मुझमें काफी जोश आ गया था और मुझे लगा कि अब कुछ पल में वह चमत्कार हमारे

सामने होगा, पर मैं गलत था, अभी भी तिलस्म का एक हिस्सा और सुलझाना बाकी था। नामूरी और कुशना तो मेरे मुरीद हो चुके थे , जो मैं कहता वह करते जाते थे। इसके आगे एक जहर भरी गुफा जिसे एक और संस्कृत श्लोक से हमने पार किया, पर कुशना न होता तो मैं वोह गुफा कभी पार नहीं कर पाता। इसे पार करने के बाद जब हम लोग आगे बढ़े तो रास्ता ही खत्म हो गया, आगे बस एक छोटी गोल दीवार थी, हम काफी थक चुके थे। कुशना रोने लगा और कुछ बड़बड़ा भी रहा था। नामूरी ने मुझे बताया कि वह कह रहा है कि यहां इतनी मुश्किलें उठाने के बाद भी हम खाली हाथ ही लौटेंगे, शायद हम उस चमत्कार को कभी न देख पाएंगे। मैंने लेकिन हिम्मत नहीं हारी और आखिर रास्ता मिल ही गया, हम शिवजी की उस छोटी मूर्ति के सामने थे पर ब्रम्हांड की उत्पत्ति जैसी कोई चमत्कारिक घटना वहां नहीं घट रही थी। वह जगह जैसे ज्वालामुखी के ठीक नीचे थी, क्योंकि वहां गर्मी बहुत ज्यादा थी। शिवजी की मूर्ति के सामने एक पानी का कुंड था। वहां हल्का उजाला था, शायद ज्वालामुखी के लावा से निकली आग उस रोशनी का कारण थी। मैं हैरान था कि कुंड का पानी एकदम साफ था और इतनी साफ जगह थी कि यकीन करना मुश्किल था कि कोई यहां बरसों से आया नहीं है। हमें चलते चलते अब तक नौ घंटे हो चुके थे, मैंने कहा नामूरी कुशना को पूछो कि ये घटना आज किस समय होने वाली है। कुशना ने बताया उसे नहीं मालूम कि ये कब होती है पर हम हर साल एक बहुत तेज़ आवाज़ सुनते हैं,जिससे हम ये जान पाते हैं कि ज्वालामुखी के पास में कुछ तो हलचल हो रही है। शायद वह ही चमत्कार होने के पहले की आवाज हो सकती है। नामूरी और कुशना ने मुझे मेरी सोने की चेन और अंगूठी देते हुए कहा कि आपकी वजह से हम यहां तक पहुंच सके आपका ये अहसान हम जिंदगी भर नहीं भूलेंगे। हम अपने साथ लाया नाश्ता करने लगे और बस दिल थाम कर उस रहस्य के उजागर होने का इंतजार करने लगे। अब आंखों में नींद सी आने लगी थी और हम लोग थक भी बहुत गए थे, तभी ऐसा लगा कि जैसे ज्वालामुखी में कोई हलचल हो रही है। जैसे कोई बहुत तेज़ आवाज़ हमारी तरफ बढ़ रही हो। वहां गहन अँधेरा छा गया, ये अँधेरा इतना गहरा था कि हम एक दुसरे को भी न देख सकते थे। वहां दूसरी छोर पर एक शंख आकार की एक बड़ी आकृति बनी थी। उसमें से लावा बहने लगा और हल्के उजाले में हम थोडा थोडा देख सकते थे। हम सब डर गए कि लावा अगर इस जगह भरने लगा तो हम लोग बच नहीं पाएंगे। शिवजी के सामने बने कुंड का पानी नीचे जाने लगा और शिवजी की मूर्ति के पीछे से फव्वारे की तरह निकलने लगा। नामूरी और कुशना धीरे धीरे ॐ नमः शिवाय का जाप करने लगे। ऐसा लगा मानो शिवजी का अभिषेक हो रहा हो। अब हमें लगा कि हमारी मौत निश्चित है क्योंकि लावा हमारी तरफ ही बढ़ रहा था। हमारी मौत हमें सामने से हमारी तरफ बढ़ती हुई दिख रही थी। नामूरी और कुशना मुझसे कुछ उपाय सोचने को कहने लगे। मैं कुछ कर पाता उससे पहले ही लावा कुंड में समाने लगा, लावा के उस शंखाकार आकृति से तेजी से बहने के कारण बहुत तेज़ आवाज़ हो रही थी और ये करीब करीब ॐ की ध्वनि से काफी मेल खाती थी, तभी शिवजी के माथे

पर बने त्रिनेत्र में हलचल होने लगी, और एक तीव्र प्रकाश या ऊर्जा उसमें से निकलने लगी। उस ऊर्जा में वहां पर रखे सभी छोटे छोटे पत्थर हवा में तीव्र गति से घूमने लगे, पर इससे बड़ा आश्चर्य यह था कि ऊर्जा एक निकल रही थी पर कुछ पत्थर clockwise तो कुछ anticlockwise घूम रहे थे। ये दो तरह की गति वाले पत्थर हवा में अलग अलग जमा होने लगे और इस प्रक्रिया में कुछ पत्थर आपस में मिलकर हवा में गायब होने लगे, तभी कुंड का पानी जो फव्वारे की तरह शिवजी की मूर्ति पर बरस रहा था, अलग अलग रंगों में परिवर्तित हो गया और ये दृश्य इतना सुंदर था कि मैं एकटक उसे कुछ देर देखता रह गया। थोड़ी ही देर बाद लावा पीछे की तरफ बहने लगा, कुंड का पानी फिर ऊपर आ गया और वह फव्वारा बंद हो गया। सारे पत्थर भी घूमना बंद होकर नीचे जमीन पर गिर गए और वह ऊर्जा जो उनको चलायमान कर रही थी, फिर से त्रिनेत्र में समा गई। अब मेरा दिमाग़ ये सोचने लगा कि इस घटना का ब्रम्हांड की उत्पत्ति से क्या लेना देना है? क्या हम इतनी मुश्किलें पार कर इस विचित्र सी घटना की गुत्थी को सुलझा पाएंगे? यही सब सोचते हुए मैंने नामूरी और कुशना को वहां से चलने का इशारा किया। हम लोग वहां से बाहर निकल आए लेकिन अब भी मेरे दिमाग में ब्रम्हांड से जुड़ी वह घटना ही चल रही थी। कैसे एक मूर्ति के होते हुए दो ऊर्जा वहां उपस्थित थी। दूसरी ऊर्जा का स्त्रोत क्या था। ये पता लगाने के लिए मुझे वह मूर्ति चाहिए थी, लेकिन उसे ले जाना इतना आसान भी न था। मुझे वह घटना फिर से देखनी थी, तभी शायद मैं किसी निष्कर्ष पर पहुंच सकता था। मैंने अगले साल फिर होलिका दहन के दिन आने का निश्चय किया। नामूरी और कुशना भी कुछ समझे नहीं, उन्होने मुझसे उस घटना को समझाने का आग्रह किया पर मैं अभी तक किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पा रहा था। मैंने उनसे बस इतना कहा कि मुझे अभी और गहन अध्ययन की जरूरत है। मैंने उनसे कहा की अभी मुझे इसके बारे मैं कुछ नहीं मालूम ,लेकिन जल्दी ही मैं इसका पता लगा लूँगा । हमें यहाँ से चलना चाहिए। मुझे रह रहकर यही विचार आ रहा था कि आखिर इस घटना का रहस्य क्या है। आखिर उन अलग अलग दिशाओं में घूमते पत्थर और पानी के सात रंगों का शिवलिंग पर गिरना आखिर क्या दर्शाना चाहता है। इसके लिए मुझे फ़िर एक बार यहाँ आने की जरुरत थी और इस घटना की बारीकी से जाँच के लिए साथ में कुछ वैज्ञानिक इंस्ट्रूमेंट्स भी चाहिए होंगे। मैंने नामुरी और कुशना का धन्यवाद् दिया और फिर वापस आने का बोल कर मैं वहां से चला आया।

अगले साल मैं फिर नामुरी और कुशना को लेकर उसी जगह गया, मेरे आश्चर्य की सीमा न रही जब मैंने पाया की तिलस्म फिर से वैसा ही बन चूका है जैसा पहले था, पर मैं भी इस बार मैं पहले से ज्यादा तैयारी के साथ गया था। फिर से वही घना अँधेरा हमारे सामने था और वह घटना फिर से अपना स्वरुप ले रही थी, मेरे पास यही मौका था । मैंने उन पत्थरों में से एक clockwise और एक anticlockwise पत्थर को अपने साथ लाये superconducting magnet box में रख लिया । एक साल के गहन अध्ययन और काफी खोजों के बाद मुझे पता चल गया था

कि उन पत्थरों को उस अवस्था में छूना जानलेवा हो सकता था। इसलिए उन्हें एक स्पेशल बॉक्स जो कि सुपरकंडक्टिंग मैगनेट से तैयार किया था, उसमें उन पत्थरों को अलग अलग कम्पार्टमेंट में खिंच लिया। नामुरी और कुशना को इतना तो समझ गया था कि एक साल की इस अवधि में मैं इस घटना के बारे में कुछ तो जान गया हूँ, तो उन्होंने चुपचाप रहना ही उचित समझा।

अब इसके बाद जो मैं करने वाला था वह मेरे लिए जानलेवा साबित हो सकता था, मैंने कुशना और नामुरी से कहा "मुझे वह शिव मूर्ति अध्ययन के लिए चाहिए"। नामुरी डर के मारे कुछ बोला नहीं, पर कुशना ने साफ मना कर दिया। वह नामुरी को कुछ बोला जिसे सुन कर नामुरी डर से पीला पड़ गया। नामुरी ने मुझसे कहा "अगर मैं इस मूर्ति को यहाँ से ले गया तो ये मूर्ति हम सबको ख़त्म कर देगी और ये आइलैंड समंदर में डूब जाएगा"। मैंने उससे कहा "मैं इसका रहस्य जानने के बाद इस मूर्ति को फिर से इसी जगह पर ले आऊंगा"। कुशना फिर भी बिलकुल तैयार न था, वह उस मूर्ति को वहां से ले जाने देने के बिलकुल खिलाफ था। मैंने नामुरी को बोला "क्या तुम नहीं चाहते कि लोग इस घटना के बारे में जानें और इस द्वीप का विकास हो?, सोचो अगर हम इस ब्रम्हांड के रहस्य को सुलझा सके तो तुम्हारे द्वीप पर ही हम इसे फिर से दोहरा सकते हैं और पूरे विश्व के लोग इसे यहाँ दूर - दूर से देखने आएंगे। कुशना को मेरी इस बात पर थोड़ा भरोसा हुआ क्यूंकि उसने मुझे उस तिलस्म की सारी बाधाओं को पार करते हुए देखा था। मैंने उससे कहा कि भगवन ने हम तीनों को यहाँ तक पहुँचाया है तो शायद उसकी भी मर्ज़ी होगी कि ये विश्व इस घटना के बारे में जाने।

नामुरी ने फिर कुशना को समझाने की कोशिश की ,और इस बार कुशना मेरी बातों से सहमत दिखता हुआ सा लगा। उसने लेकिन एक शर्त रखी कि अगर द्वीप पर कुछ भी अनहोनी की आशंका दिखी तो मुझे ये मूर्ति फिर से वहीँ ला के रखनी होगी। मैंने उसे वादा किया कि वह जब भी मुझे कहेगा मैं ये मूर्ति तुरंत ले आऊंगा। वे लोग मूर्ति को हाथ लगाने को तैयार न थे ,सो मैंने ही शिवस्तुति बोलते हुए उस मूर्ति को लाल कपडे से ढंका और उसे अपनी गोद में उठा लिया। कुशना और नामुरी को लगा कि कुछ अनहोनी होगी ,उन्होंने चारों तरफ देखा पर कुछ न हुआ।

हम उस मूर्ति और उन दो पत्थरों को लेकर उसी रास्ते से वापस बाहर चल दिए चल दिए। हम कुछ दूर उन पांच गुफाओं के पास पहुंचे ही थे कि कुशना का विचार फिर बदल गया, उसने मुझसे मूर्ति देने को कहा। वह उस मूर्ति को फिर से वहीँ रखना चाहता था। इतना दूर आकर अब मैं पीछे नहीं मुड़ना चाहता था, मैंने उसे अब साफ मना कर दिया कि अब ब्रम्हांड के रहस्य को जाने बिना मैं ये मूर्ति वापस नहीं करने वाला। उसने मुझसे वह मूर्ति छीनने की कोशिश की पर मैंने उसे दृढ़ता से पकड़े रखा, इसी छिना-झपटी में नामुरी दौड़ कर हम दोनों को रोकने आया और कुशना से टकरा गया। कुशना फिसल कर एक गुफा में जा

गिरा, मैं कुछ कर पाता उससे पहले मूर्ति निचे गिर गई और कुशना उस गुफा में नीचे फिसलता चला गया। गुफा से सापों के फुफकारने की आवाज़ साफ सुनाई दे रही थी और कुशना की चीखों ने उस सन्नाटे को चीर दिया, नामुरी ये देखकर पागलों की तरह भागते हुए चिल्लाया कि कोई नहीं बचेगा प्रोफेसर साहब, मूर्ति को अपनी जगह पर रख दीजिये। कुशना मर चुका था और नामुरी मुझे छोड़ कर भाग गया। मैंने भारी मन से मूर्ति पर फिर लाल कपडा ढंका और वहां से चल दिया।

इस एक साल में किये गए अध्ययन से में ब्रम्हांड की उत्पत्ति का तो राज जान चूका था पर मुझे ये समझ नहीं आ रहा था कि वहां एक उर्ज़ा का स्त्रोत होते हुए भी उन कणों कि गति अलग-अलग दिशा में कैसे थी। ये राज जानने के लिए मुझे मूर्ति को अपने साथ ले जाना बहुत जरुरी था।

ब्रम्हांड के बनने का क्रम कुछ ऐसा था। सबसे पहले गहन अँधेरा था, शंख की आकृति शिव त्रिनेत्र का प्रतिक थी, जिसमें पदार्थ (matter) और अपदार्थ (anti-matter) को एक बहुत ही strong magnetic field से अलग अलग किया हुआ था। ये strong magnetic field एक द्रव्य से बनकर तैयार किया हुआ था। किसी कारण से उस द्रव्य कि शक्ति कमज़ोर होकर उस शंखाकर आकृति में बहने लगी, जिससे कि नाद यानि ॐ की उत्पत्ति हुई। ॐ एक नाद की तरह था जिसने उस शंखाकार आकृति में कंपन पैदा किये और पदार्थ और अपदार्थ अपनी साम्य अवस्था से विचलित होकर आपस में टकराने लगे। ये उर्जा इतनी विस्फोटक थी कि ये संपूर्ण ब्रम्हांड में फ़ैल गई और ब्रम्हांड में उपस्थित सोये हुए कणों को पदार्थ (matter) और अपदार्थ (anti-matter) में बदलने लगी। ये पदार्थ और अपदार्थ भी फिर आपस में टकराकर और उर्जा पैदा करने लगे और इस तरह से ब्रम्हांड का फैलाव शुरू हुआ, क्यूंकि ये सब कुछ ॐ नाद के कंपन से शुरू हुआ था, इसलिए ये सारे कण कंपन करते हुए ॐ का ही नाद उत्पन्न करते थे।

वह पानी का कुंड ज्ञान का प्रतीक था जिसमें गायत्री मन्त्रों से सात रंगों की उत्पत्ति हुई। रंगों की उत्पत्ति गायत्री मन्त्रों के बहने के कारण हुई । जो शिव और त्रिनेत्र का अभिषेक कर रही थी।

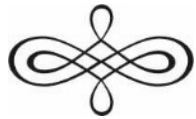

6. 6. त्रिनेत्र की खोज

इसके बाद शर्मन को डायरी में कुछ लिखा नहीं मिला। सुचिता और शर्मन को ये समझ नहीं आ रहा था कि प्रोफेसर रंगनाथन ने उस मूर्ति के साथ क्या एक्सपेरिमेंट किया था, और जब प्रोफेसर इतना सब जान गए थे तो उनका एक्सपेरिमेंट सफल क्यूँ नहीं हुआ। उन्होंने परमशिवं को पूछा क्या उसे इसके बारे में कुछ पता है । परमशिवं ने कहा कि प्रोफेसर साहब ये डायरी यहीं छोड़ गए और जितना शर्मन को इस डायरी से पता चला उतना ही परमशिवम् को भी पता था।

उन्होंने परमशिवं को नामुरी के बारे में पूछा, उसने बताया कि नामुरी अब इस दुनिया में नहीं है, इस भयंकर सुनामी में वह और उसका परिवार भी ख़त्म हो गए। परमशिवं बोला " साहब नामुरी ने सही कहा था ये मूर्ति सबको ख़त्म कर देगी, देखिये न साहब उनमें से कोई भी नहीं बचा, और पूरा द्वीप भी तबाह हो गया, शायद हम भी न बचें पर उससे पहले हमें इस मूर्ति को उसकी सही जगह पर पहुँचाना होगा, क्यूंकि होलिका दहन 25 मार्च को है और उससे पहले अगर त्रिनेत्र, शिव-मूर्ति में नहीं स्थापित हुआ तो प्रलय आने से कोई नहीं रोक पायेगा. हमारे पास सिर्फ एक दिन है।

तभी शर्मन को कुछ याद आया वह बोला " सुचिता प्रोफेसर साहब ने लिखा था कि अंत में पदार्थ(matter) और अपदार्थ (anti-matter) को पैदा करने वाली ऊर्जा को त्रिनेत्र ने सोख लिया था, लेकिन इस मूर्ति को देखो इसमें त्रिनेत्र तो है ही नहीं। उन तीनों ने उस मूर्ति को देखा और अब शरमन को समझ आ गया कि हुआ क्या था। वह बोला "सुचिता प्रोफेसर अपने साथ पदार्थ और अपदार्थ को उस superconducting magnet box" में लेकर गए थे, हो न हो वह उन दोनों पत्थरों को आपस में टकराकर वो ही उर्जा पैदा करना चाहते थे.

मैंने इस मूर्ति का गहन अध्ययन किया है, ये मूर्ति ही उस दूसरी ऊर्जा की उत्पत्ति का कारण है, क्यूंकि ये अपने अन्दर उस Dark matter को सहेजे हुए है जो अपदार्थ (anti-matter) को ऊर्जा देता है। उस त्रिनेत्र में Dark energy है जो सिर्फ matter को ही ऊर्जा देता है। Dark energy, Dark matter से ही साम्य अवस्था में आ सकती है।

वह त्रिनेत्र भी इतनी energy को तभी सोख पाएगा जब इस शिव मूर्ति में लगा हो।

त्रिनेत्र matter को और ये मूर्ति anti-matter को ऊर्जा देती है, इसीलिए anti-matter ऊर्जा नियंत्रण के बाहर हो गई क्यूंकि इसमें त्रिनेत्र था ही नहीं जो matter की ऊर्जा को नियंत्रण में ला सके, और anti-matter ऊर्जा इतनी विस्फोटक हो गई कि अपने साथ पाचों इमारतों और प्रोफेसर को भी ख़त्म कर दिया, **क्यूंकि matter और anti matter आपस में मिल के एक दूसरे को ख़त्म कर देते हैं.।**

त्रिनेत्र और मूर्ति दोनों एक-दुसरे के पूरक हैं. शिव और शक्ति का प्रतीक हैं। बिना शिव के शक्ति भी अधूरी है और बिना शक्ति के शिव भी.

सुचिता अप्पा को याद कर के रोने लगी, शर्मन ने उसे धीरज रखने को कहा, और वह बोला "सुचिता मुझे ये नहीं पता कि वह त्रिनेत्र कहाँ है, पर हमें जल्दी ही त्रिनेत्र को इस शिव मूर्ति में पुनः स्थापित करना होगा, क्यूंकि शिव से शक्ति जितने समय तक अलग रहेगी प्रलय मचाती रहेगी।

अब हमारे पास और कोई रास्ता नहीं, ये मूर्ति ही उस दूसरी ऊर्जा की उत्पत्ति का कारण है क्यूंकि ये अपने अन्दर उस dark matter को सहेजे हुए है जो अपदार्थ को उर्जा देता है।

ये ब्रम्हांड जिस शंखाकार आकृति से पैदा हुआ था, उसमें dark matter, dark energy, matter और anti-matter थे। जैसा कि प्रोफेसर साहब ने लिखा है इन चारों की साम्यावस्था को बनाये रखने के लिए एक strong electromagnetic field उनमें द्रव्य के द्वारा पैदा किया हुआ था।

अब हमें इस मूर्ति में पहले त्रिनेत्र को खोजकर पुनर्स्थापित करना है और उसके बाद इस मूर्ति को अपनी जगह पर ले जाकर प्राण प्रतिष्ठा करनी है।

सुचिता बोली " शर्मन लेकिन अप्पा ने तिलस्म में जाने का रास्ता तो डायरी में बताया ही नहीं हम उस तिलस्म को तोड़ेंगे कैसे?"। इसका जवाब न शर्मन के पास था न परमशिवं के। शर्मन इतना ही बोला " अगर अप्पा कर सकते हैं तो हम भी कर ही लेंगे। सुचिता थोड़ी आश्वस्त हुई, क्यूंकि अप्पा भी शर्मन को उनके जितना ही बुद्धिमान मानते थे। वह हमेशा कहते थे कि एक शर्मन ही है जो उनके प्रयोगों को समझकर उनमें और सुधार कर सकता है, इसीलिए वह हर प्रयोग करने के बाद शर्मन से विचार विमर्श करते थे।

शर्मन बोला " लेकिन जाने से पहले हमें कुछ तैयारियां करनी पड़ेगी"। परमशिवं बोला "साहब आप मुझे भी साथ ले चलिए, मुझे भी अपने किये का पश्चाताप करना है। न मैं प्रोफेसर साहब को ये कहानी सुनाता न वह नामुरी से मिलते और न ये सब होता। शर्मन बोला

“परमशिवं तुम्हें मालूम है न, हम जहाँ जा रहे हैं, वहां जान का खतरा है”, परमशिवं बोला “साहब कभी कभी गलतियों का बोझ जान से ज्यादा होता है, आप मुझे बताइए क्या-क्या चाहिए, मैं बंदोबस्त कर देता हूँ। ”

शर्मन ने उसे कुछ सामान की लिस्ट दी और सुचिता को फिर से परमशिवं के कॉटेज जाने को बोल के खुद कहीं चला गया, उसने सुचिता से कहा कि वह रात तक आ जायेगा। परमशिवं भी दिए हुए सामान को इकट्ठा करने को निकल पड़ा। रात तक शर्मन आ गया, सुचिता के पूछने पर उसने टाल दिया, परमशिवं ने खाना बनवा लिया था, तो उन सबने साथ खाना खाया और शर्मन ने अगले दिन सुबह ही निकलने का बोल के वो सोने चले गए, हालाँकि नींद किसी कि आँखों में न थी, प्रोफेसर की डायरी पड़ने के बाद सबको अंदाज़ा हो चूका था कि ये सफ़र उनकी जिंदगी का आखिरी सफ़र भी हो सकता था।

अगले दिन परमशिवं,सुचिता और शर्मन समंदर किनारे पहुँच गए, परमशिवं ने पहले से ही एक नाविक का बंदोबस्त कर रखा था। १० घंटे कि थका देने वाली यात्रा के बाद वे नार्कुंडा पहुँच गए, वहां पहुँचने के बाद अब भी प्रश्न वही था कि वहां तक पहुंचा कैसे जाये। शर्मन ने कहा कुशना का पिता इस आपदा में बच गया है, वह हमें वहां तक ले जायेगा। परमशिवं ने उसकी तरफ ऐसे देखा जैसे वह पूछ रहा हो कि ये सब उसे कैसे पता और कुशना का पिता तो पहले से ही इन सब के खिलाफ था, वह हमारी मदद क्यूँ करेगा। परमशिवं कुछ पूछता उससे पहले ही शर्मन बोला “कल मैं इसी काम के लिए गया था, यहाँ का कोस्ट गार्ड मेरी पहचान का है, उसे ही कल मैं मिला था, उसने नार्कुंडा के उसके किसी परिचित से हॉट लाइन पर बात की और मैंने उसे पूछा कि गाँव का पुजारी कुशना का पिता जिन्दा है? जो जरावा जाति का है।

क्यूंकि ये जगह इतनी बड़ी नहीं, तो उसने पता किया और जल्द ही बताया कि कुशना का पिता राघम अभी भी जिन्दा है। मैंने उससे कहा कि तुम राघम को बस इतना बताओ कि एक आदमी शिवमूर्ति ले के आया है, वह समझ जायेंगे। उसने जब राघम को ये बताया, तो वह जल्दी ही हॉटलाइन पर आया और उसने कोस्ट गार्ड को कहा कि वह मुझसे जल्द से जल्द मिलना चाहता है। मैंने कोस्ट गार्ड से कहा कि कल हम नार्कुंडा आयेंगे और हमें उनकी मदद की जरुरत होगी। राघम ने कहा कि वह हमारी हर संभव मदद के लिए तैयार है। कोस्ट गार्ड उनको ले के अभी आता ही होगा।

थोड़ी ही देर में कोस्ट गार्ड और राघम हमारे सामने थे, कोस्ट गार्ड ने हमें walkie-talkie दिया और कहा इस पर आप हमें कहीं से भी संपर्क कार सकते हैं, उसने उसे कुछ १८० hertz फ्रीक्वेंसी पर सेट किया और डबल चेक करने के बाद वहां से चला गया। राघम मूर्ति देखते ही फफक-फफक कर रोने लगा, उसको देख के सुचिता की आँखों में भी आंसूं आ गए आखिर उन दोनों ने अपना सगा खोया था। एक ने अपना बेटा तो एक ने अपना पिता। दोनों कुछ देर के लिए मौन रहे फिर

शर्मन ने परमशिवं को कहा "इनको बताओ कि हमें ये मूर्ति वापस उसकी सही जगह पर पुनर्स्थापित करनी है तो ये हमें उस जगह तक ले के जायें"। परमशिवं ने राघम से जब बोला तो, राघम ने जो कहा वह सुन के परमशिवं कुछ देर के लिए चुप हो गया। शर्मन बोला क्या हुआ परमशिवं क्या कहा राघम ने। परमशिवं बोला "साहब राघम भी हमारे साथ चलना चाहता है ,ये कह रहा है कि एक बाप को इससे बड़ा दुःख नहीं हो सकता कि उसके बुढ़ापे का सहारा उससे पहले दुनिया छोड़ के चला जाये। उसे नामुरी ने बताया था कि उसके बेटे को उस तिलस्म ने अपना शिकार बना लिया, तो अब वह हमारे साथ आकर उसके बेटे की लाश का अंतिम संस्कार करना चाहता है, साथ ही ये कह रहा है कि शिव मूर्ति के विधिवत पुनर्स्थापन के लिए आपको इनकी जरुरत लगेगी ही।

शर्मन को उसकी बात सही लगी, पर वह परमशिवं से बोला "इनसे कह दो कि वहां जान का खतरा है, शायद हम कभी वापस भी न आयें"। परमशिवं ने राघम को कहा। राघम का उत्तर सुनकर वह फिर निरुत्तर हो गया। परमशिवं बोला "साहब ये कह रहा है कि इसका जवान बेटा जब से गया है ये वैसे भी जिन्दा लाश से ज्यादा कुछ नहीं "।

शर्मन अब ज्यादा कुछ बोल न सका और उसे साथ चलने का इशारा किया। वह चारों अब ऐसी यात्रा पर निकल चुके थे ,जहाँ से वापस आना शायद संभव भी न था। पहले जिन लोगों ने ये यात्रा की थी, आज उनमें से कोई जिन्दा न था। बड़े ही निर्जन स्थान से गुजरते हुए जहाँ सिर्फ उनके क़दमों की आहट के अलावा सिर्फ आस पास कि झाड़ियों में कुछ हिसहिसाने की आवाज़ ही सुनाई देती थी। सुचिता और परमशिवं दोनों के चेहरे पर डर साफ दिखाई दे रहा था। शर्मन अपने साथ लायी टॉर्च से उस कच्चे रास्ते की लम्बाई टटोलने कि कोशिश कार रहा था पर आगे धुंध होने के कारण उसे कुछ खास अंदाज़ा न आ पाया। राघम एक लकड़ी के सहारे सबसे आगे चल रहा था, उसके चेहरे पर जैसे कोई भाव ही न थे, बस वह चलता जा रहा था। करीब एक घंटे चलने के बाद राघम रुक गया, वह बोला "साहब यही वह खाई है जिस पर बना पत्थरों का पुल वहां जाने की पहली बाधा है।

शर्मन को पता था कि उसे अब यहाँ से खुद के बुद्धिबल पर ही आगे बढ़ना होगा। उसने आस- पास नजर डाली हालाँकि श्लोक प्रोफेसर की डायरी में भी लिखे हुए थे, पर वह कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहता था। वह उस चमकते पत्ते की ओर बढ़ा और उसमे लिखे दोनों श्लोकों को पढने लगा।

पहला श्लोक था –

गोपीभाग्य मधुव्रातः श्रुंगशोदधि संधिगः ।
खलजीवितखाताव गलहाला रसंधरः ।।

दूसरा श्लोक था-

त्रयीमयायः त्रिगुणात्मधारिणे विरञ्चनारायणशङ्करात्मने।।

सुचिता अपने डर को छुपाती हुई बोली "बोलो मेरे Einstine अब कैसे जाना है"?, शर्मन थोडा रुका और बोला, आप लोग सब मेरे पीछे आइये और गलती से भी किसी और पत्थर पर पांव नहीं रख देना वरना वह आपकी जिंदगी की आखिरी गलती होगी। सभी ने शर्मन की बात को सर आँखों पर लिया और वह शर्मन के पीछे पीछे पत्थरों पर पांव रखते हुए पुल पार कर गए। सुचिता ने शर्मन को गले लगा लिया बोली "ये पहेली क्या थी?"

शर्मन बोला सनातन धर्म में ऋषि-मुनि बड़े बुद्धिमान हुआ करते थे, वह जब भी कोई नयी खोज करते थे तो उसको याद रखने के लिए उसे "क ट या प दि" तरीके में बदल देते थे। इस तरीके से वह उस श्लोक के मूल रहस्य को आम लोगों से बड़ी खूबसूरती से छिपा लेते थे। पुलगा देव ने भी ऋग्वेद में लिखे इस श्लोक को लेकर उसी तरीके का उपयोग किया है। पहला श्लोक देखने में श्रीकृष्ण की स्तुति लगता है पर सच्चाई इससे बिलकुल अलग है, "क ट या प दि" में वर्णों के मान निम्नलिखित तालिका के अनुसार होंगे -

१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	-	-	-	-	-
य	र	ल	व	श	ष	स	ह	-	-

उपरोक्त सारणी में सिर्फ व्यन्जनों के मान होते थे, स्वरों के नहीं, स्वरों का कोई मान ही नहीं होता था.

इस श्लोक से आपको Pi की वास्तविक जानकारी ३२ अंकों तक मिलती है। और इस तरीके में आपको उन अंकों को उल्टा पढ़ना होता

है.इस श्लोक से Pi कि ये value मिलती है

भ bha	द् d	रा rā	म् ṃ	बु ba	द् d	धि dh	सि sa	द् d	ध dha	ज ja	न् n	म ma	ग ga
4	-	2	-	3	-	9	7	-	9	8	-	5	3

णि ṇa	त ta	श् ṣ	र ra	द् d	धा dha	स् s	म ma	य ya	द् d	भू bha	प pa	गि gi
5	6	-	2	-	9	-	5	1	-	4	1	3

3.14159265358979323846264338327 92

अब दूसरे श्लोक को जानकर के पुलगा देव ने अपने मन से रचा है, जिसका अर्थ आम भाषा में है कि ये पूरा ब्रम्हांड त्रिगुणा है अर्थात सत, रज और तमस से बना है और हर पदार्थ में यही तीन गुण होते हैं, पर वह सही में कहना चाहते हैं कि तुम्हें सिर्फ उन पत्थरों पर पांव रखना है जिनको 3 से गुणा किया जा सके और वह पहले श्लोक में pi की value में 3 के गुणक हो। तो हमें 3,9,6,3,9,9,3,3,6,6,3,3,3,9 इन्हीं पर पांव रखना था।

सुचिता अप्पा और शर्मन दोनों की बुद्धि की कायल ही हो गई। शर्मन ने कहा “हमें अब और देर नहीं करनी चाहिए और सीधा अपने गंतव्य की ओर बढ़ना चाहिए। आगे जाने पर उन्हें एक छोटा पानी का झरना मिला जहाँ उन्होंने हाथ-पांव धोये और थोडा आराम किया और अपने साथ लाये नाश्ते को मिल बाँट कर खाया। वहीँ उन्हें “U” शेप की चट्टान भी मिल गई, जैसा प्रोफेसर ने अपनी डायरी में लिखा था। जैसा कि प्रोफेसर ने लिखा था उस चट्टान पर भी एक श्लोक लिखा था जो कि इस प्रकार था-

तंसर्वलोककलनात्मककालमूर्तिं,
गोकण्ठबंधनविमचोनमादिदेवम्॥

सुचिता बोली ये श्लोक तो लगता है भगवन श्रीकृष्ण के लिए लिखा गया है क्यूंकि सबसे उत्कृष्ट और गायों को बंधन मुक्त करने वाले भगवन तो श्रीकृष्ण ही हैं। शर्मन उसकी तरफ देखकर मुस्कुराने लगा, और बोला अच्छा इतनी संस्कृत तुम्हें भी आती है, पर इसमें तुम श्लोक का आखिरी हिस्सा भूल गई जिसमें आदि देवं लिखा है, जो कि भगवन सूर्य कि तरफ

इशारा कर रहा है। सूर्योदय होने के बाद गायों के गले से रस्सी खुल जाती है और वह आजाद होकर विचरने लगती हैं।

सुचिता बोली "तो करना क्या है? यहाँ तो सूर्य की किरण भी न पहुँच रही और इस निर्जन स्थान पर गाय तो क्या एक छोटा सा जानवर भी नहीं दिख रहा। क्या हमें सूर्योदय का इंतज़ार करना पड़ेगा? शर्मन ने कुछ सोचा और फिर इधर- उधर कुछ ढूंढने लगा। तभी उसकी नज़र चट्टान के दायीं तरफ बने एक छेद पर पड़ी। उसने उस छेद के अन्दर टॉर्च से प्रकाश डाला, पर उसे कुछ मिला नहीं। तभी उसे झरने की याद आई ,वहां भी कुछ लिखा था, जो आराम के चक्कर में उसके ध्यान से निकल गया। वह फिर झरने के पास गया और वहां ऊपर की एक चट्टान के पास गया। पानी एकदम कांच जैसा साफ था। चट्टान पर लिखावट साफ नज़र आ रही थी, उस पर लिखा था-

"तत्त्वं नास्ति "

उसने सुचिता को बुलाया और कहा कि, सुचिता सबरीमाला मंदिर में जब हम गए थे तो वहां क्या लिखा था कुछ याद है? सुचिता ने हाँ में सिर हिलाते हुए कहा और बोली वहां लिखा था "तत्त्वं असी "। यानि तुम ही वह हो जिसे तुम खोज रहे हो। वहां मुझे तो अन्दर दर्शन को भी जाने न दिया गया था।

शर्मन बोला यहाँ लिखा है "तत्त्वं नास्ति" ये क्या नया विचार है। शर्मन सोचने लगा, उसे अपने ससुर प्रोफेसर रंगनाथन पर बहुत गर्व हो रहा था कि वह सारी पहेलियाँ सुलझा कर अन्दर गए थे। उसने मन ही मन कहा अप्पा आप जीनियस हो। सोचते-सोचते उसने पानी से एक एकदम गोल पत्थर उठाया और उसमें देखा, उसे आश्चर्य हुआ कि उसे इसमें अपना चेहरा दिख रहा था। ये पत्थर कुछ-कुछ कांच के जैसे ही गोल थे, उसने 3-4 पत्थर और उठाये और मुस्कुराने लगा। सुचिता उसे देखकर बोली "इतने भी स्मार्ट नहीं हो, जो पत्थरों में खुद की शक्ल देखकर मुस्कुरा रहे हो," उसने सुचिता को देखा और फिर वापस अपने काम पर लग गया।

उसने 3-4 पत्थरों को किनारे पर रखा और बाकी को वापस झरने में डाल दिया। उसने सुचिता से कहा "तत्त्वं नास्ति" का मतलब है, जिसमें तुम नहीं हो। मतलब ऐसे पत्थर जिसमे आर – पार दिखता हो। उसने परमशिवं को आस पास से मोटी लकड़ी लाने को कहा और लकड़ी को ज़मीन में गाड़ कर उसको ऊपर से थोडा दो भागों में बाँट कर उनमे वह पत्थर फंसा दिए। ये पत्थर बिलकुल छेद की सीध में एक रेखा में थे। वे चार पत्थर बिलकुल लेंस कि तरह दिख रहे थे जिनके आर पार देखा जा सकता था, उसने सब को थोडा दूर रहने को कहा और पहले पत्थर पर टॉर्च का प्रकाश डाला। वह प्रकाश इकट्ठा होकर दूसरे पत्थर से तीसरे और तीसरे से चौथे पत्थर से होकर जब उस छेद तक पहुंचा तो जैसे थोड़ी देर के लिए इतनी रौशनी फ़ैल गई, जैसे सुबह का उजाला सब जगह फैलता है। सुचिता का सूर्योदय हो चूका था। अबकी बार जब उसने

छेद के अन्दर हाथ डाला तो उसे एहसास हुआ कि वहां किसी जानवर की मूर्ति है, उसने उस मूर्ति को टटोला और उसके चेहरे पर मुस्कराहट आ गयी। उसने एक झटके से अन्दर से कुछ खिंचा और वह चट्टान का मुँह खुल गया। परमशिवं और सुचिता फिर उसे देखने लगे तो शर्मन बोला "अन्दर एक गाय की छोटी मूर्ति है जिसके गले में रस्सी बंधी थी, मुझे बस उसकी रस्सी खींचनी थी।जब मैंने सिर्फ टॉर्च का प्रकाश डालकर अन्दर हाथ डाला तो मुझे कुछ न मिला क्यूंकि श्लोक के हिसाब से सूर्य देवता अर्थात सूर्य जैसा प्रकाश का होना जरुरी है। झरने में कुछ ही पत्थर ऐसे थे जिनके आर-पार देखा जा सकता था।

अब वह लोग उस खुली सी चट्टान जो कि एक मुँह की तरह दिख रही थी ,में प्रवेश कर गए। थोड़ी दूर चलने के बाद उन्हें गर्मी महसूस हुई, उन्हें समझ आ गया कि आगे तेजाब से भरी नदी है, जैसा कि प्रोफेसर ने लिखा था। वहां ऊपर कुछ mushroom जैसी आकृतियाँ थी, जो गिर रही थी और तेजाब की तेज़ धार उस नदी के ऊपर बने लोहे के पुल पर गिर रही थी, उस पुल को पार करना मतलब खुद को तेजाब की धार के हवाले कर देना था। शर्मन को छोड़कर बाकी सब बहुत डर गए। राघम तो कुछ बड़बड़ाने लगा और परमशिवं और सुचिता ॐ नमः शिवाय का जप करने लगे।

शर्मन कुछ देर रुका और बोला "हमें उन mushrooms को उस पुल पर गिरने नहीं देना है, कुछ भी हो वह पुल पर बनी जालियों पर न गिरने पायें। हम चारों को साथ रहना है और किसी भी हाल में mushrooms को थामे रखना है और बिना पुल को स्पर्श कराये फिर उन्हें नदी में फेंकना है।" शर्मन सबसे आगे और सुचिता सबसे पीछे थी, परमशिवं और राघम उनके बीच में थे। शर्मन का पहला पांव पुल पर पड़ते ही एक बड़ा mushroom गिरा, जिसे शर्मन ने संभाल लिया और नदी में डाल दिया, सुचिता तो बचपन में अच्छी gymnast थी, तो वह सबसे आसानी से mushroom लपक रही थी और नदी में फेंक रही थी। 2 बार तो राघम से mushroom गिरते-गिरते बचा जिसे सुचिता ने संभाल लिया। वह उन चारों में सबसे अच्छी तरह इस काम को कर रही थी।

सभी ने पुल पार किया और जिन्दा बचने के लिए भगवन को और सुचिता को धन्यवाद् किया। इस बार किसी ने शर्मन से कुछ नहीं पूछा, क्यूंकि वे समझ चुके थे कि जब-जब वह mushroom पुल से टकराते थे तभी तेजाब की धार गिरकर उनको नदी में गिराती थी।

थोडा आगे चलने के बाद उन्हें वह 5 गुफाएं जो कि गड्ढे जैसी दिखती थी, दिख गई। अबकी बार शर्मन बोला हमें यहाँ रुकना होगा, हो न हो त्रिनेत्र इन्हीं पांचों गड्ढों में से कहीं है, क्यूंकि कुशना जब प्रोफेसर से मूर्ति छीन रहा था तो वह यहीं टकराकर किसी गड्ढे में गिरा था। वह ये बोलते बोलते ये भूल गया कि कुशना का पिता राघम वहीँ है। राघम ने उसकी ओर बड़ी ही कातर दृष्टि से देखा। उसे शर्मन के भावों से समझ गया कि वह कुशना की ही बात कर रहा है।

वह गुफाएं कितनी गहरी थी, किसी को नहीं मालूम था और प्रोफेसर की डायरी से ये मालूम चल चूका था की इन गुफाओं में साँपों की भरमार है, राघम ने इशारे से शर्मन से शिव-मूर्ति उसे देने को कहा। राघम ने ज़मीन पर लाल कपड़ा बिछाया और मूर्ति को उस पर रख दिया। फिर वह ज़ोरों से कुछ मंत्र पढने लगा। उस सन्नाटे में उसकी आवाज़ माहोल को डरावना बना रही थी। थोड़ी देर में सबने देखा की शिव मूर्ति एक गुफा की तरफ मुड़ गई। राघम ने परमशिवं को कुछ कहा। परमशिवं बोला "राघम कह रहा है कि शिव की शक्ति इसी गुफा में है और कुशना भी, तो राघम अन्दर जाना चाहता है।

ये सबको पता था कि उस गुफा में ढेर सारे जहरीले सांप हैं जो कि किसी को भी पल भर में मौत के घाट उतार देंगे, तो उसमें जाना अपनी मौत को दावत देना है। इस बार तो शर्मन भी सोच में पड़ गया, उसका भी दिमाग काम नहीं कर रहा था। उसने राघम को इशारे से रोका और खुद कुछ देर बैठ के सोचने लगा। सुचिता बोली "क्यूंकि ये सब मेरे अप्पा की वज़ह से हुआ है तो इस बार मैं उस गुफा से शक्ति को ले के आउंगी" । शर्मन ने कहा "पागल न बनो सुचिता ये वक़्त जोश से नहीं होश से काम लेने का है"। बस सब कुछ देर शांत रहो।" सब उसकी बात मान कर बैठ गए और एक अजीब सा सन्नाटा वहां पसर गया और उस सन्नाटे को साँपों के हिसहिसाने की आवाज़ और डरावना बना रही थी।

शर्मन उठा और बोला, सुचिता पहले हम इस शिवमूर्ति को उस गुफा में प्रवेश करवाते हैं फिर देखेंगे कि क्या होता है। शर्मन ने परमशिवं से बोला "राघम को कहो कि वोह उसके गले कि रुद्राक्ष माला उतर कार दे"परमशिवं के कहने पर राघम ने वैसा ही किया और माला शर्मन को दे दी। शर्मन ने रुद्राक्ष की माला को काट कर लम्बा कर दिया और फिर शिव मूर्ति को लाल कपडे से बांध कर माला के एक सिरे से बांध दिया। फिर धीरे-धीरे उसने उस गड्ढेंनुमा गुफा में शिव मूर्ति को उतारना शुरू किया। उनके आश्चर्य की सीमा न रही सभी सांप निकलकर दुसरे गड्ढों में जाने लगे, थोड़ी देर में वह गुफा पूरी तरह साँपों से खाली हो गई। शर्मन बोला अब मैं इस गुफा में जाता हूँ। सुचिता ने उसे गले लगाया और फिर वह एक रस्सी के सहारे उस गुफा में शिव मूर्ति को लेकर उतरने लगा। रस्सी के एक सिरे को ऊपर बांधा हुआ था और तीनों मिलकर उस रस्सी को अच्छे से पकडे हुए थे। करीब 30 फीट उतरने के बाद उसे एक चमकती हुई चीज़ दिखाई दी, जो त्रिनेत्र ही थी। उसने त्रिनेत्र को जैसे ही हाथ में लिया उसके हाथ में कुशना का हाथ भी आ गया। एक पल को शर्मन डर गया, पर फिर खुद को सँभालते हुए उसने कुशना के शरीर को उस रस्सी से बांधा और फिर रस्सी को झटका देने लगा जो कि उसे ऊपर खींचने का सिग्नल था। उन तीनों ने मिलकर शर्मन और कुशना को ऊपर खिंचा और करीब 15 मिनट की मेहनत के बाद शर्मन और कुशना ऊपर आ गये। राघम कुशना के शरीर को देखकर फूट फूट कर रोने लगा। कुशना का शव न गला था न उसमें बदबू आ रही थी, वह अभी भी ऐसा था जैसे अभी-अभी उसकी मृत्यु हुई हो। शायद ये त्रिनेत्र के उसके

हाथ पर गिर जाने के कारण हुआ था। राघम ने जरावा जाति के विधान के हिसाब से कुशना का शव अग्नि के हवाले किया और कुछ देर वहीं बैठ कर उसे निहारता रहा।

7. 7. शिव शक्ति का मिलन

शर्मन परमशिवं को बोला तुम राघम से कहो कि अब हमें यहाँ से चलना चाहिए, हमारी मंजिल हमारा इंतज़ार कर रही है। परमशिवं ने राघम को संभाला और चलने को कहा। राघम परमशिवं से बोला अब ये त्रिनेत्र उसी जगह फिर से शिवमूर्ति में पुनर्स्थापित होगा, तब तक शिवमूर्ति और त्रिनेत्र दोनों को लाल कपडे से बांध दो, मैं अब इस मूर्ति को तब तक हाथ नहीं लगा सकता जब तक हम वहां नहीं पहुँच जाते, क्यूंकि अभी-अभी मैंने कुशना का अंतिम संस्कार किया है।

परमशिवं ने राघम की बातें शर्मन को बता दी। शर्मन ने उस मूर्ति और त्रिनेत्र को लाल कपडे में लपेटा और संभाल के बैग में रख लिया। अब आगे इन गुफाओं में से कौनसी वह गुफा थी जिसमें उन्हें जाना था। शर्मन ने कहा सभी लोग फिसलने के लिए तैयार हो जाइये और ऐसा कहकर बच्चों कि तरह एक गुफा के पास जाकर बैठ गया और खुद को गुफा में धकेल दिया, वह फिसलता हुआ सीधा नीचे आ गिरा। वहीँ से सबको उसने आवाज़ लगाई और कहा कि सब एक-एक कर के आना। पहले उसने सुचिता को संभाला, फिर परमशिवं को और फिर परमशिवं और शर्मन ने मिलकर राघम को।

फिर से सबकी निगाहों में वही सवाल था कि आखिर शर्मन को मालूम कैसे हुआ कि ये वही गुफा है। शर्मन बोला आप लोग अब भी नहीं समझे, ये तिलस्म नंदी की आकृति का बनाया गया है, जहाँ हम पहले उनके मुँह से प्रवेश किये, फिर पेट में जैसे एसिड होता है वैसे ही तेजाब भरी नदी थी जिसमें लगातार कुछ खाना गिर रहा था, फिर हम आये उनके पांवों और पूंछ की तरफ, जहाँ चारों गुफाएं सीधी थी, तो बस यही एक गुफा थोड़ी सी slope लिए हुए थी, यानि कि हम नंदी की पूंछ से बाहर आ गए।

सुचिता को शायद ही शर्मन पर उतना प्यार कभी आया होगा जितना की आज आ रहा था। वह चारों तरफ देखते हुए बोली, वह देखो यहाँ नंदी की मूर्ति भी है। लेकिन नंदी का मुँह हम जिस दिशा से आये उस तरफ क्यूँ है, इन्हें तो शिवजी वाले स्थान की तरफ देखना चाहिए। वह नंदी की मूर्ति के पास गई और उसे घुमाने की कोशिश करने लगी, परमशिवं ने भी उसकी मदद की, और जैसे ही मूर्ति की दिशा उलटी हुई और एक और गुफा जो कि नाग के फन के आकार की थी, उसका मुँह

खुल गया, और साथ ही उस पर लिखा एक श्लोक भी नज़र आने लगा। सुचिता बोली, देखा मैं भी अप्पा कि बेटी हूँ।

शर्मन ने श्लोक पर नज़र डाली वह कुछ इस प्रकार था -

"सर्पाप सरम भद्रं ते दूरम गच्छा महाविष,

जनमेजय यग्यनते आस्तिक्य वचन स्मर"।

पर उसको पढ़ते ही नाग गुफा से विष से भरा धुंआ बाहर आने लगा और वह धीरे-धीरे उस स्थान में भरने लगा, उन सबकी हालत ख़राब होने लगी, शर्मन ने बोला "सब लोग जितनी देर साँस रोक सके रोक लें, मैं कुछ करता हूँ" पर उसे खुद समझ नहीं आ रहा था कि करना क्या है? उसके ऊपर भी विष के प्रभाव से मूर्छा आने लगी थी और सबको लगा कि उनके जीवन का अंतिम क्षण अब आ गया है। विष के धुएं में कुछ समझ नहीं आ रहा था। इतने में राघम कुछ पत्तियां ले के आया और उन सबके मुँह में डाल दी, धीरे धीरे सब अपने प्राण फिर से शरीर में महसूस करने लगे। थोड़ी ही देर में उन पर जहर का असर होना बंद हो गया, तो राघम ने उन्हें अन्दर चलने का इशारा किया।

नाग गुफा के अन्दर जाकर इस बार शर्मन पूछे बिना न रह सका कि कैसे राघम ने हम सबको बचाया। परमशिवं ने जब ये राघम को पूछा तो वह बोला कि जनमेजय यज्ञ मैं हजारों साँपों के मरने के बाद जब उस यज्ञ की राख को पृथ्वी पर फेंका गया तो वह मिटटी में मिल कर नागपुष्प नाम के पौधे को जन्म दी । इस पौधे कि यह खासियत है कि इसके फूल 36 साल में एक बार आते हैं पर उसकी पत्तियां बड़े से बड़े सांप का ज़हर उतारने की ताकत रखती है। कुशना को भी उस पौधे की पहचान थी। हो सकता है प्रोफेसर को भी नाग-गुफा के अन्दर लाने में उसी ने मदद की होगी, इसीलिए प्रोफेसर दूसरी बार भी कुशना को अपने साथ ले गए थे। शर्मन को याद आया इसी जगह के लिए प्रोफेसर ने लिखा था कि अगर कुशना न होता तो हम कभी न बच पाते।

अबकी बार शर्मन राघम का शुक्रगुजार हुआ, और बोला "आप न होते तो आज हमारा बचना मुश्किल ही था"। थोड़ी देर चलने के बाद गुफा का रास्ता बंद हो गया और आगे जाने का कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। अब सब शर्मन की ओर देखने लगे। शर्मन बोला डायरी में प्रोफेसर ने लिखा है कि वह यहाँ से नीचे गए थे, पर यहाँ नीचे जाने का तो कोई रास्ता नहीं दिख रहा। वह थोडा पीछे गया और जमीन पर अपनी उँगलियों की ठक-ठक से कुछ सुनने लगा। उसने राघम से उसकी लकड़ी देने को कहा और उस जगह जोर जोर से मारने लगा, थोड़ी ही देर में वह जगह टूट गई और नीचे जाने का रास्ता दिखने लगा। शर्मन बोला "सांप का पेट वाला हिस्सा सबसे कोमल होता है, इसीलिए मैं थोडा पीछे आ के ज़मीन की जाँच कर रहा था। ये हिस्सा सबसे कमज़ोर था, आगे आप लोगों को मालूम ही है।" वे लोग छोटी छोटी सीढियां जिन पर एक बार में एक ही आदमी जा सकता था, उतरने लगे। नीचे उतर के

राघम ने सबसे पहले कुंड के पानी से स्नान किया और फिर शर्मन से मूर्ति और त्रिनेत्र को लेकर उसी स्थान पर रख दिया, जहाँ वोह पहले विराजमान थी। वह कुछ मंत्र पढने लगा और साथ में कुण्ड का जल भी मूर्ति और त्रिनेत्र पर छिडकने लगा, तभी वहां गहन अँधेरा छा गया, जैसा कि प्रोफेसर ने बताया था और कुण्ड का पानी नीचे जाने लगा, सब लोग कुण्ड के पीछे जा के खड़े हो गए और शिवमूर्ति में त्रिनेत्र जा के समा गया। उनके सामने ब्रम्हांड की उत्पत्ति की घटना आखिरी बार घटी क्यूंकि उसके बाद वह शिवमूर्ति कुण्ड के पानी में समा गई और वह सारा स्थान टूटने लगा। उनको समझ नहीं आ रहा था कि वे कहाँ जायें कि तभी वह स्थान जहाँ शिवमूर्ति पहले विराजमान थी, खिसकने लगा और उन्हें बाहर जाने का रास्ता दिखने लगा। वह उन सीढियों से जब बाहर निकले तो उन सब के आश्चर्य कि सीमा न रही, जब उन्होंने पाया कि वह पत्थर के उसी पुल के पहले खड़े थे जहाँ से उन्होंने यात्रा शुरू की थी।

शायद ये उनके सत्कर्मों का फल था जिसके कारण वह सभी जिन्दा बच गए थे और वह पत्थर का पुल उनके सामने ही टूट गया, शायद कुदरत अब नहीं चाहती थी कि अंब और कोई इस रहस्य को जाने। सुचिता ने शर्मन को गले से लगा लिया और सभी के मन में एक सुकून था कि उन्हें उनके सभी सवालों का जवाब मिल चूका है।

राघम को उसके बेटे के अंतिम संस्कार का अवसर मिला तो सुचिता को उसके अप्पा के गायब होने का रहस्य पता चला। परमशिवं के मन का बोझ उतर चूका था क्यूंकि अब और कोई ब्रम्हांड की उत्पत्ति के चक्कर में अब कभी अपने प्राणों का त्याग नहीं करेगा, न कभी सुनामी में इतनी जानें जाएँगी।

"लेकिन भविष्य किसने देखा है वह शिवमूर्ति शायद उस कुंड से होते हुए समंदर के किसी कोने में कहीं गहरे में जा छिपी है , पर इंसान आज नहीं तो कल समंदर की वह गहराइयाँ भी नाप ही लेगा।"

शर्मन ने matter और anti-matter से ब्रम्हांड कि उत्पत्ति का विस्तृत बखान अपनी एक थ्योरी से किया और इस थ्योरी को उसने "नाथन थ्योरी" का नाम दिया, आखिर ये रंगनाथन के ही प्रयास थे जिसने दुनिया को ब्रम्हांड की उत्पत्ति के एक नए आयाम से अवगत कराया। इसी के साथ सुचिता का वह संकल्प पूरा हुआ कि वह अपने अप्पा को उनका पुराना सम्मान दिलाकर रहेगी।

:समाप्त:

राहुल जैन की यह पहली किताब है। बचपन से कहानियों के संसार से इनका जुडाव रहा है, जिसके कारण आज भी ब्रम्हांड और उसके रहस्यों से जुडी कहानियों में इनकी दिलचस्पी रहती है। इस उम्र में भी इनका यह जुडाव ही है जो इस कहानी कि परिकल्पना को साकार करने में सफल रहा है। लेखन और मौलिक कवितायेँ इनका पसंदीदा क्षेत्र है, जिसमें इन्होंने न केवल अपने शैक्षिक समय में अपितु अपने सेवाकाल में भी सम्मान प्राप्त किये हैं. ये इनका पहला सराह्नीय प्रयास है। हम आशा करते हैं कि आगे आने वाले समय में भी ये अपने विचारों से पाठकों को ओत-प्रोत करते रहेंगे.

धन्यवाद